मूल्य रु. ५-००

श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महिने की ११ तारीख सलंग अंक १३८ अक्टूबर-२०१८

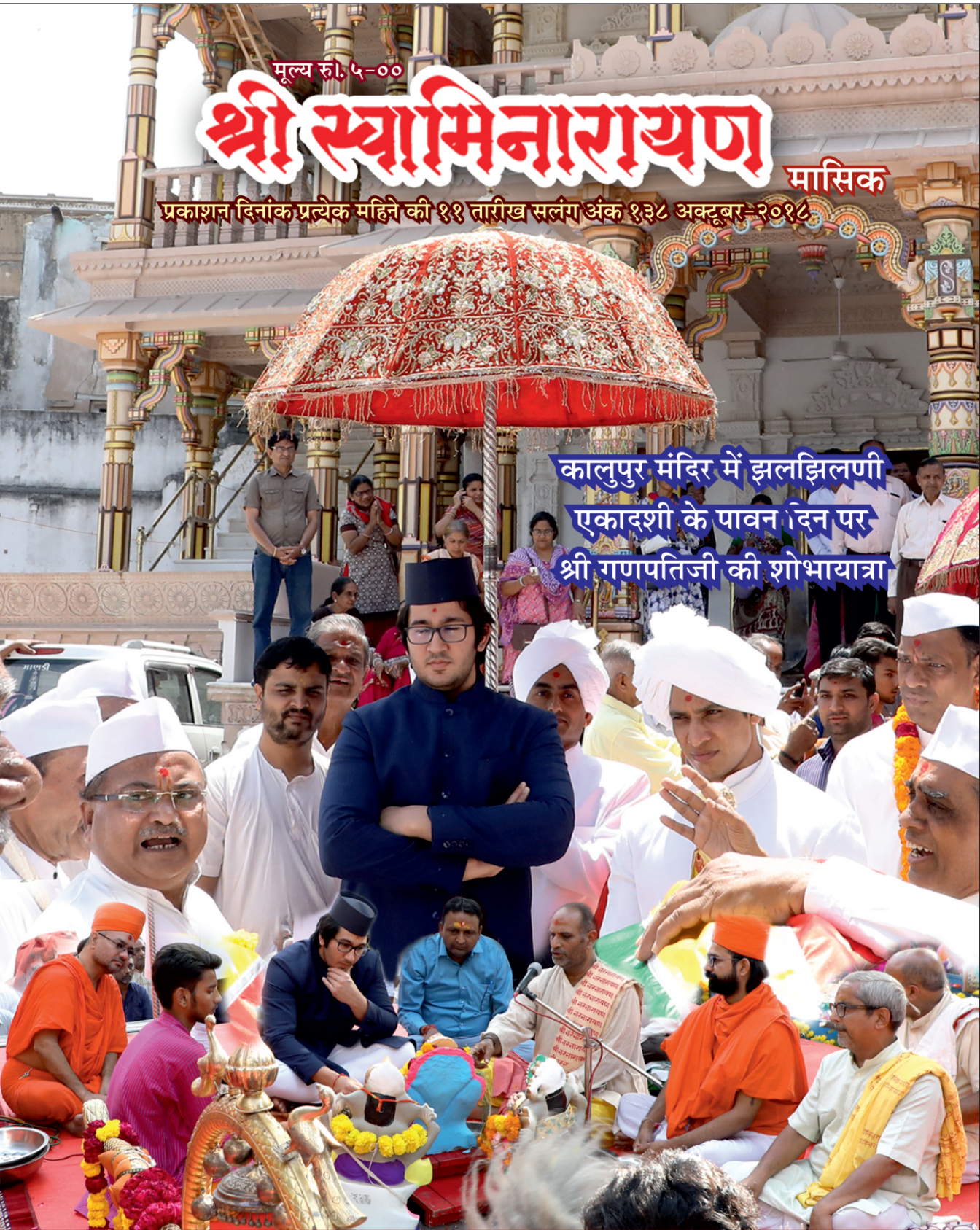

कालुपुर मंदिर में झलझिलणी एकादशी के पावन दिन पर श्री गणपतिजी की शोभायात्रा

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

(१) एडमिन्टन (केनेडा) मंदिर के पाटोत्सव अवसर पर सभामें दर्शन देते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री। (२) विल्सडन (यु.के.) मंदिर के संत स्मृति कथा के अवसर पर प.पू. आचार्य महाराजश्री की आरती उतारते संत-हरिभक्त। (३) कार्डिफ (यु.के.) मंदिर के पाटोत्सव के अवसर पर ठाकोरजी का अभिषेक करते हुए संत। (४) लेस्टर (यु.के.) मंदिर में जन्माष्टमी के अवसर पर श्रीकृष्ण जन्मोत्सव मनाते हुए संत एवं हरिभक्त। (५) न्युयोर्क (अमेरिका) मंदिर में गणेश चतुर्थी के पावन अवसर पर श्री गणपतिजी का पूजन करते हुए हरिभक्त यहाँ पर जन्माष्टमी उत्सव भी बड़े धामधूम से मनाया गया। (६) करांची (पाकिस्तान) स्थित हमारे श्री स्वामिनारायण मंदिर में जन्माष्टमी और गणेश चतुर्थी के उत्सव बड़े उत्साह से मनाये गये। (७) पारसीपनी (अमरिका) मंदिर में जलझीलणी एकादशी के दिन श्री गणपतिजी की शोभायात्रा का दर्शन।

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र
वर्ष - १२ ● अंक : १३८
अक्टूबर-२०१८

संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत
स्वामी)

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
मो. ८२३८००१६६६
मो. ९०९९०९८९६९
magazine@swaminarayan.in
www.swaminarayan.info

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in
मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	झूला उत्सव	०६
०४.	हे वर्णीवेष धारी रक्षा करो	०८
०६.	दया के सागर श्रीहरि	१०
०६.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१२
०७.	सत्संग बालवाटिका	१६
०८.	भक्ति सुधा	१९
०९.	सत्संग समाचार	२१

अस्मदीयम्

श्री स्वामिनारायण मासिक के सर्वे पठन करने वाले श्रीहरि के प्रेमी हरिभक्तो विद्वतवर्य लेखक महोदय और कीसी भी प्रकार से अपने इस सामायिक के साथ जुडने वाले सभी को हमारे नूतन वर्ष का सह प्रेम जयश्री स्वामिनारायण। इसके बाद का नवम्बर को अंक आपको सुंदर अलौकिक केलेन्डर स्वरुप में प्राप्त होगा।

हमने पूरे वर्ष के दरम्यान इस लोक के कारण अर्थ उपार्जन आदि बहुत कुछ किया होगा जो व्यवहारिक में जरुरी है और इस के लिए धंधा-नोकरी और किसानो को खेती करनी पडे।

इस सब के बाद जीव के लिए के लिए जो करना है वो कितना किया वो बहुत जरुरी है। आप को कितने पुण्य के प्रताप से यह महामूल्यवान मनुष्य अवतार मिला है और इस वह संप्रदाय में जन्म मिला है उन के भाग्य का उद्धार हो गया। अपने को जो मिला है वो किसी को भी नही मिला है। अनंत कोटी ब्रह्मांड के अधिपति सर्व अवतार के अवतारी श्री स्वामिनारायण भगवान की प्राप्ति हुई है जिससे हमको तो बहुत बडी प्राप्ति हुई है जिस से उसे हमारे ईष्टदेव में उस स्वरुप में अपनी निष्ठा द्रढ होनी चाहिए दूसरी सब भगवान माफ करते है पर स्वरुप निष्ठा में खामी होगी तो नही चलेगा इस लिए इस का खास ध्यान रखना है।

पुरुषोत्तम नारायण ये सर्वकर्ता है, सर्व कारण है, सर्व नियंता है अति स्वरुपवान है अति तेजस्वी है अति समर्थ है और 'कर्तुम कर्तुम न्यथाकर्तु' समर्थ है, यह जो अपनी ईच्छा में आवे तो यह अक्षरधाम में रहनेवाले जो मुक्त के सर्वे के अपने तेज से लीन करके स्वयं एक ही बिरामजान रहे और जो अक्षरधाम में खुद ही रहे हे वै अक्षर को भी लीन करके खुद ही स्वरुप होई अकेले ही बिराजमान रहे, और अपने मन में आवे तो ये अक्षरधाम के बिना भी अनंतकोटि मुक्त के खुद को ऐश्वर्य करके धारण करने का समर्थ है(व.लोया-१२)

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की

रुपरेखा

(सितम्बर-२०१८)

६-७-८	केनेडा में सास्काटोन में नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर का भूमि पूजन प्रसंग पर पधरामणी।
८	श्री स्वामिनारायण मंदिर रजाइना का केनेडा पाटोत्सव प्रसंग पर पधरामणी।
९	श्री स्वामिनारायण मंदिर एडमिन्टोन केनेडा पाटोत्सव प्रसंग पर पधरामणी।
१० से १३	लंडन विल्सडनलेन श्री स्वामिनारायण मंदिर संत स्मृति कथा पारायण प्रसंग पर पधरामणी।
१८	श्री स्वामिनारायण मंदिर चलोडा (धोलका देश) पधरामणी।
२०	श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर जलझिलणी एकादशी के श्री गणपितजी के वरघोडा में पधारे।
२१	श्री स्वामिनारायण मंदिर वडु पदयात्रा प्रसंग पर आशीर्वाद देने में पधरामणी।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(सितम्बर-२०१८)

२०	श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर जलझिलणी एकादशी के श्री गणपितजी के वरघोडा में पधारे।

झूला उत्सव

हिंडोळा उत्सव

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

परात्पर परब्रह्म लीला पुरुषोत्तम भगवान श्रीकृष्ण गोकुल-वृंदावन में ग्यारह वर्ष निवास करके जन्मो जन्म भगवान का दिव्य सुख मनुष्य के रुप में प्राप्त करने आतुर भक्तो - मुक्तो को मनोरथ शुभ कामनाओ जो - जो संकल्पो में बाकी अधुरा रहा होता है जिसने जन्मो जन्मो से प्रतीक्षा कर रहे पूर्वे जो जो अवतार स्वरुप या किसी में भी रहे दिए हुए वरदानो को पूरा करने तथा खुद के धाम अति प्रिय भक्त-पार्षदोनी पंक्तियो से मिलने वाली कामनाओ वाले समस्त मुक्त आत्माओं में श्रीहरि प्रकट है पूर्व वज्रवासी मनुष्य के रुपमें गोप-गोपाल, गोपीयो, गाय, गोवल, वनवेली, लगा पशु, पक्षी किट वितपियो के शरीर में जिसने जैसा जन्म लिया अवसर प्राप्त हो वैसे-वैसे शरीर धारण करके श्रीजी की सेवो मां शामिल होकर प्रभु को पाने के लिए मिलने के लिए सेवा में प्रतीक्षा करते भक्तो-मुक्तो खुद का स्थान पकड कर सुख मिलने वाली समय की राह देखते रहे। वासुदेव - देवकी, नंद-यशोदा के पुत्र के रुप में उसमें सम्मान करके खुश किया। के मखन लीला और रास लीला के माध्यम से गोपीयो के अरमान पर को यमुना स्नान करके महाराणी यमुनाजी की सेवा अंगीकार करी। और इस के नियमित व्रज कुमारीयों ने गायो और गौत्सव के गायो को चराने का न्याल किया। हरेक को शिक्षा और दीक्षा दी।

अब परमात्मा के दिव्य सानिध्य के स्पर्श सुखी बंधित जो व्रजभूमि को बारावन चौबीस उपवन तथा गिरीराज पर्वत के समीप एक सो बतीस वन और छियान्वे प्रकार के वृक्ष वेली लता के शरीर में रहे भक्तो की मनोकामना पूर्ण करने में एकबार पवित्र श्रावण महीने में जब वर्षाऋतु में मेघराजा की महेरबानी से वन उपवन में रहे पेड जिसमें रणछोड का वास है ऐसे तरुवर के शरीर धारण मुक्तो और सोलाह कलाओं से संपन बन कर मंद सुगंधको पवन देव द्वारा श्रीजी प्रभु तक पहुंचा के मानो ठाकुरजी को बुलाने का हुंकार संदेश देने लगे थे। तब महा प्रभुने उनकी कोटी-कोटी जन्म जन्मान्तर की कामनाओं को पूरी करने श्रावण-महीने में एक ऐसी लीला करी की गोपीयों के श्रीजी बाल प्रभु ने छः वर्ष की उम्र में पहुंचे। तब उस समय गोपीओं ने कहा वन उपवन में बहुत सुंदर प्रकृति खील उठी है। फूल अपनी सुगंधफैला कर आपकी प्रतीक्षा कर रहे है एसा लग रहा है। और वन में कितनी सखीयो के साथ श्री स्वामी पधारे है।

ऐसे मनमोहक मीठे-मीठे वचनों - प्रलोभ का प्रवचन करती गोपीयों ने श्रीजी के साथ वन में चली गई। लता बहुत की सुंदर कदम के पेड की घटा से सुशोभित पेडोकी डालीयो से श्री स्वामीने एक झूला बना कर रखा है। उस झूले को बन उपवन में रहे फल फूल पान

रंग-बिरंगे रंगो के साथ रंग वृक्ष वेली लता की शाखा का पुष्पों में एक-दूसरे के आधार पर एक दूसरे से जुड कर शोभा बढ़ाई है । गोपीया को झूले में बाल प्रभु को पकडकर बिराजमान किया और पुष्पों के साथ भगवान को तरह-तरह के फूल को सजावट की मस्तक पर फूलो का मुकुट रखा । कान के कुंडल, बाहों के बाजु बंधचरण में पायल के अलंकार को धारण करके श्रीहरि की सजावट की तब शंख की घंट नाद की साथ युगल स्वरुप में (श्री कृष्ण-राधाजी) को रखा खुद की युगल उपासना की पुष्टि करके झूलाने लगी तो दिव्य दर्शन करके वन-उपवन में पक्षीयों की आवाज गूंजन करते सूर में सूर मिलाने लगी । ऐसा तो दिव्य आनंद प्रभु ने दिया की शरीर और जगत तो भूल गया है । मनोहर मूर्ति और खुद की सेवा का आनंद मात्र क्षणिक को हो पर उसके बदले में सारे ब्रह्मांड का सुख न आए । ऐसा करते संध्या जंगल तथा श्रीजी और स्वामी की युगल स्वरुप अदृश्य होने पर झूला उत्सव पूर्ण हुआ । गोपीयों का मूल शरीर तो घर पर ही था । दिव्य शरीर श्रीहरि को झूला देने की सेवा में आयी थी ।

दूसरे दिन भी जंगल वन उपवन में झूला उत्सव का आयोजन हुआ । जो वन में रहे वृक्ष वेली लता को अवसरो देने पर आपका भिन्न-भिन्न वन उपवन में झूला उत्सव का आयोजन हुआ श्रावण के बत्रीस दिन पर्यन्त झूला उत्सव हुआ । उसमें युगल स्वरुप (श्रीकृष्ण श्री राधाजी) ने अर्पण युगल उपवन में सेवा-भक्ति-दर्शन सुख को वे झूले के उत्सव व्रज में आयोजन है । ये उत्सव कुल बत्रीस दिन आयोजन हुआ । व्रज लीलाओ में श्री राधाजी ने श्री दामा का श्राप होने से श्रीजी के सानिध्य से सदा वंचित रही थी । हिंडोले (झूला) उत्सव में एक से एक मात्र ये उत्सव में व्रजवासीयों ने युगल स्वरुपी दिव्य सेवा को अलभ्य लाभ दिया । बत्रीस दिन में १६ दिन श्रीजी की भावना लाकर और १६ दिन श्री स्वामी राधाजी की भावना लाकर अर्पण करने में आती है ।

अपने सम्प्रदाय का व्रत के उत्सवों वैष्णव परंपरा के श्री श्रीमद् विट्ठलनाथजी की उत्सव रीती के अनुसार करने मे आता है । श्री ठाकुरजी ने हिंडालो का झूला उत्सव कहे तो वन महोत्सव की व्रज की लीला को प्रगट प्रत्यक्ष स्मृति उत्सव झूले तो श्रावण महीने में करने में आता है । उस झूले मे युगल स्वरुप मे अर्पण ही दो हाथो के स्तंभ को स्वरुप में श्री ललिताजी और श्री विशालाजी के स्वरुप हो झूले को नीचे बिछे आसान में श्री यमुनाजी महारानी की भावना हो भक्तों को हृदय नवपल्लवित अंकुरित फुलो से सजावट हो उसमें विभइन्न मनोहर से मनोरथ के फल-फुल पान आदि से कलात्मक झूले की सजवाट हुई । उन दिनों में बेनु नही मात्र झूले रखा जाता है । शंख - घंटनाद की झाल की ध्वनि के साथ श्री महाप्रभु मदनमोहन बिराजमान हो पवित्रा एकादशी के दिन वल्लभ संप्रदाय के भगवान श्री ठाकुरजी का जन्म दिन होता है उसे पुष्टिमार्ग का जन्म दिन कहा जाता है । उसकी स्मृति में युगल स्वरुप में दूसरे दिन पवित्र सूत के द्वारा निर्मित सूत्र माल (पवित्रा) के सजावट और झूले डाले में आते है । महाप्रभु को उन दिनो में माखन मिसरी का भोग लगाने में आता है ।

इस झूले उत्सव में इष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायण महाप्रभु के सत्संग में गढडा, वडताल, जेतलपुर, अहमदाबाद आदि धामो में झूले का उत्सव का आयोजन करने में आता है । उसमें सद्गुरु निष्कुलानंद स्वामीने बारह दरवाजो में झूला बनाकर उसमें श्रीहरि को अर्पण है । वो बारह स्वरुप धारण कर के प्रभु ने भक्तों को आनंद दिया था । जेतलपुर में अक्षर फुल वाडी में आसोपालव की डाली में सद्गुरु आनंदानंद स्वामी ने झूले बनाये में श्रीजी महाराज को झूलाया था । विशेष तो वृक्ष, वेली, लता का सरीर में प्रगट हुए भक्तो की सेवा में कामणा पूर्ण कर कर के उत्सव में झूला उत्सव कहा जाता है । परंतु आज काल तो बहुत से मंदिरो में यांत्रिक वस्तुओं, धातुओ में पात्र जैसी वस्तुओं श्रीजी का पवित्र झूला लटकाते है । तब उन्होंने श्री बाल प्रभु की व्रज की ''वनवासी महोत्सव'' झूला महोत्सव की कथा का हार्द जानने जरुरी है ।

झूले मे विराजमान युगल सरकार श्री महाप्रभु भगवान श्री कृष्ण राधाजी ने दर्शन करने वाले को यम लेने नही आते है सेवा करे अथवा झूला झूलाते है उनका कोटी जन्मो का पाप जलकर भस्म हो जाता है ।

हे वर्णीवेष धारी रक्षा करो

- शा. स्वा. निर्गुणदासजी (अमदावाद)

वंशस्थवृत्तम्

अथेकादा दिव्यतपास्तपंस्तस्विनां कौतुककारकर्मकः ।
यथेस्टयोगाय वने वसन्वशी स वर्णिवेषोऽवतु धर्मनन्दनः ॥१॥
नवीननीलाम्बुददिव्यविग्रहो जितेन्द्रियो योगकलासु कौशलः ।
कृषीकृतांगतपसा तपोधनः स वर्णिवेषोऽवतु धर्मनन्दनः ॥२॥
कटितटे पिंगलवर्णवेशलां नवीनमौंजीं दधदेवमेखलाम् ।
जटां दधानोऽथ शिरोरूहच्छटां स वर्णिवेषोऽवतु धर्मनन्दनः ॥३॥
सितोपवितां सततोऽटवीरुचितीव कौपीनपटं दृढं दधत् ।
विराजमानो मृगचारुचर्मणा स वर्णिवेषोऽवतु धर्मनन्दनः ॥४॥
दधच्चकण्ठे तनुतौलसीं स्त्रजं सनामपाणौ जपमालिकां तथा ।
सचन्द्रमध्योर्ध्वतमालपत्रकः स वर्णिवेषोऽवतु धर्मनन्दनः ॥५॥
तनूतरस्कन्धनिषक्तपुस्तको रतः सदा बालमुकुन्दपूजने ।
वनेचरैः सिद्धगणैस्तु सेवितः स वर्णिवेषोऽवतु धर्मनन्दनः ॥६॥
सर्सिहशार्दूलवराहवारणैर्महामृगैर्वेलगणैश्च संकुले ।
वनेऽपि धीरो विचरन्नभीतिकः स वर्णिवेषोऽवतु धर्मनन्दनः ॥७॥
सदात्मदर्शी फलकन्दभोजनो वने निवासो यदि दुःखदः खलु ।
तथाऽपि तत्रापि सुखो महामतिः स वर्णिवेषोऽवतु धर्मनन्दनः ॥८॥

इति श्रीयोगानन्दमुनि विरचितं श्रीधर्मनन्दनतपश्चर्या वर्णनाष्टकम् ॥

अथेकादा दिव्यतपास्तपंस्तस्विनां कौतुककारकर्मकः । यथेस्टयोगाय वने वसन्वशी स वर्णिवेषोऽवतु धर्मनन्दनः ॥१॥

योगानंद मुनि भगवान श्री स्वामिनारायण नीलकंठ नाम वर्णिवेष धारण करके पुल्हाश्रम में जो चार महिने पर्यन्त अति कठोर और उग्र तपश्चर्या कारी तब तप कितना उग्र और कठोर है की जिस को देख कर एक समय में पुल्हाश्रम में युगो की दिव्य शरीर धारण करके तप करते है बडे-बडे तपस्वीओंने भी अति-आश्चर्य होने लगा जिस से परस्पर एक दूसरे से पूछने लगे की ऐसा उग्र तप करने वाला है कौन ? ऐसे शब्दो को सुनकर अन्य तपस्वीओं ने भी कुतुहल आश्चर्य पूर्वक नीलकंठ वर्णि महाप्रभु ये महान तप में दिखने और विचारने लगे की ये कर्म कोई देव के मनु.य से ही हो सकता है, अपने जैसे तपस्वीओं को भी आश्चर्य में जल दिया ऐसे कार्य करने सामर्थी साधारण देख के मनुष्य में तो होगा ही नहीं बस लिए जरुर थे कोई खुद की इच्छा से ये महान योग की साधना करना स्वयं दिव्य शरीर धारण परमेश्वर हो ऐसा लगता है वो परब्रह्म परमात्मा भगवान श्री स्वामिनारायण धर्मदेव का पुत्र को रुप से प्रगट होकर तपस्वी जैसे वर्णि का वेष धारण करके वन में निवास करते प्रभु मेरे जप तप धर्म ज्ञान वैराग्य और भक्ति की रक्षा करो ।(१)

नवीननीलाम्बुददिव्यविग्रहो जितेन्द्रियो योगकलासु कौशलः । कृषीकृतांगतपसा तपोधनः स वर्णिवेषोऽवतु धर्मनन्दनः ॥२॥

अषाढ महीने के प्रातः काल में आकाश में छाऐ मेघाडम्बर जैसे श्याम वर्ण के दिव्य सुंदर मनोहारि मनुष्य शरीर धारण कर के खुद की सभी ईन्द्रियो पर जीत ने का

अष्टांग योग सिध्धकरने में कुशलता वाला योग की लीलाओ यम नियम आसन प्राणायम प्रत्याहार धारण ध्यान और समाधिके आठ अंग और आठ क्रियाओं की नेती धोती बस्ती कुंजर कपाल भाती शक्तिपात्र कुष्ठनीति और त्राटक ये क्रियाओ को करने में प्रविणता प्रात करने के लिए जिसने खुद का शरीर तप कर के एकदम कुश कर दिया है। अर्थात् ऐसा कठोर तप करा है। जिस से खुद के शरीर में मांस और रुधिर को सुखा कर दिया है केवल तप रुपी धन बाकी रखा है वो परब्रह्म परमात्मा भगवान श्री स्वामिनारायण धर्म देव के पुत्र के रुप में प्रगट होकर तपस्वी का जैसे वर्णि का वेष धारण कर के वन में निवास करते प्रभु मेरा जप, पतप धर्म ज्ञान वैराग्य और भक्ति की रक्षा करो।(२)

कटितटे पिंगलवर्णवेशलां नवीनमौंजीं दधदेवमेखलाम् ।
जटां दधानोऽथ शिरोरूहच्छटां स वर्णिवेषोऽवतु धर्मनन्दनः ॥३॥

श्रीहरि महाप्रभु के वर्णीवेष धारण करके खुद की कमर उपर मुंज नामक सुखा कर पीली हो गई धास की दर्म की मेखला बांधी है कमर बंधबांधा है नवीन ताजी सुंदर जनेऊ दारण कर के रखी है और जब से गृह त्याग किधा है तब से खुद के मस्तक का मुंडन किया नही उस से लंबी और काली मस्तक को शोभा देने वाली सुंदर जटा धारण करी है ऐसे तो परब्रह्म परमात्मा भगवान श्री स्वामिनारायण धर्म देव के पुत्र के रुप में प्रकट होकर तपस्वी जैसे वर्णि का वेष धारण करके वन में निवास करते प्रभु मेरा जप तप धर्म ज्ञान वैराग्य और भक्ति की रक्षा करो।(३)

सितोपवितां सततोऽटवीरुचितीव कौपीनपटं दृढं दधत् ।
विराजमानो मृगचारुचर्मणा स वर्णिवेषोऽवतु धर्मनन्दनः ॥४॥

शीतल शांत सफेद पवित्र और स्वच्छ धमठा धारण किया है। और सतत धने जंगल में अकेले ही विचरण करने मुझे बहुत अच्छा लगता है। ब्रह्मचर्य व्रतकी रक्षा के लिए कोपीन वस्त्र बहुत ही मजबूत कठोर कर के बाँधने की आदत है। तप करना और मंत्र जप करना सुंदर और श्रेष्ठ मृगचर्म उपर बिराजमान होकर नित्य कर्म और पूजा बिगर कर सकते है वे परब्रह्म परमात्मा भगवान श्री स्वामिनारायण धर्म देव को पुत्र के रुप में तपस्वी जैसे वर्णि का वेष धारण करके वन में निवास करते प्रभु मेरा जप तप धर्म ज्ञान वैराग्य और भक्ति की रक्षा करो।(४)

दधच्चकण्ठे तनुतौलसीं स्त्रजं सनामपाणौ जपमालिकां तथा ।
सचन्द्रमध्योर्ध्वतमालपत्रकः स वर्णिवेषोऽवतु धर्मनन्दनः ॥५॥

जगत को भले के लिए तपस्वी वर्णि जैसे वेष धारण कर के श्रीहरि मे खुद के कंठ में तुलसी के लकडीयों में से बनाई कंठी गले में धारण करी है और दाहिने हाथ में महामंत्र और नाम मंत्र का जप करने के लिए तुलसी की १०८ मनको वाली माला धारण कर के नामी सहित अखंड नाम का जप किया है खुद के विशाल भाल में कपाल में ऊर्ध्वपुंड्र तिलक चंदे को साथ किया है। ऐसा तो परब्रह्म परमात्मा भगवान श्री स्वामिनारायण धर्म देव के पुत्र के रुप में प्रगट होकर तपस्वी जैसे वर्णि का वेष धारण करके वन में निवास करते प्रभु मेरा जप तप धर्म ज्ञान वैराग्य और भक्ति की रक्षा करो।(५)

तनूतरस्कन्धनिषक्तपुस्तको रतः सदा बालमुकुन्दपूजने ।
वनेचरैः सिद्धगणैस्तु सेवितः स वर्णिवेषोऽवतु धर्मनन्दनः ॥६॥

पिता धर्मदेव और विद्वानपंडितो के पास से पढ कर जो आठ सत्शास्त्रो का सार का लेख लिखा है वो पुस्तक खुद के नित्य पाठ के लिए साथ रखे है उसको वस्त्र में छुपा कर कंठ मे गला के साथ बाँधरखा है। और दररोज सुबह में नित्य पूजा में बाल मुकुन्द की स्वरुप में पूजा करने लगे है वन में रहने वाले वन वासीओं वर्णि की ऐसी कठोर तपस्या का दर्शन कर के तो श्रीहरि की पूजा करने लगे है तुम्हे देखकर कितने मंत्र की साधना और अष्टांग योग के सिद्ध करने वाले सिद्धाक भी वर्णि की पूजा करने में जुड गए है। वो परब्रह्म परमात्मा भगवानश्री स्वामिनारायण धर्म देव को पुत्र के रुप में प्रगट होकर तपस्वी जैसे वर्णि का वेष धारण करके वन में निवास करते प्रभु मेरा जप तप धर्म ज्ञान वैराग्य और भक्ति की रक्षा करो।(६)

सर्सिहशार्दूलवराहवारणैर्महामृगैर्वेलगणैश्च संकुले ।
वनेऽपि धीरो विचरन्नभीतिकः स वर्णिवेषोऽवतु धर्मनन्दनः ॥७॥

(पेईज नं. ११)

दया के सागर श्रीहरि

- चंद्रकान्त मोहनलाल पाठक (गाँधीनगर)

तुम्हे कुछ कहना है ?

एक संत महाराज के पास गढपुर जा रहे थे उन्होने भगा दोशी से पूछा भगा दोशी की आँख में आंसू आ गए। उन्होने कहा मेने महाप्रभु से मिलने की बहुत इच्छा है परंतु ये बुखार शरीर में से जाता ही नही एसी बिजली, मेघगर्जना, बारिसे और यतके समय में किस प्रकार तुम महाराज को मेरा नमस्त कह के जय नारायण कहना।

संत ने गढपुर की बात पकडी झरमर झरमर बरसात चमकती बिजली और गरजते बादल ऐसे माहोल में श्रीहरि का स्मरण करते करते संत धीमे कदमो से चल रहे थे। हर जगह पानी भर गया था। गढपुर के बैठने की जगह पर जब नजदीक पहुंचे और दादा खाचर के दरबार दरवाजे पर आकर जंजीर से खटखट की वहाँ पर तो मुसलाधार बरसात जोरो-शोरो के साथ टूट पड़ा। भगत ने दरवाजा खोलकर संत को गले मिलकर जय स्वामिनारायण कहा संत ने भी सामने से जय स्वामिनारायण कहा प्रतिभाव दिया। भगत ने पूछा भगा दोशी क्या कर रहे है सभी परिवार कुशल है न ? संत ने कहा भगाभाई बुखार आया है। उतरता ही नही और मेरे साथ आने की बहुत इच्छा थी परंतु तालाब और बरसात के कारणो ऐसे असमर्थ थे। बिचारे की आँखो में आंसु आ गए।

अक्षरओरडी में श्रीहरि सोए हुए थे वे जग गए पेहेरा देते हुए भगुजी ने पूझा बाहर कौन बाते कर रहा है। भगुजी ने कहा एक संत अभी बोटाद से आए है वे। बात कर रहे है। महाराज ने कहा उन्हे यहाँ बुलाओ।

संत आकर दंडवत प्रणाम करने लगे श्रीहरि कहते है की महापुरुष ! कपडा बदल कर आओ भीजे कपडे में सर्दी हो जाएगी वो साधु कपडे बदलके आए तब महाराजने पूछा तुम बाहर क्या बात कर रहे थे।

संत ने कहा हे महाराज ! मैं ऐसी बात कह रहा था की भगा दोशी को मेरे साथ आपका दर्शन करने के लिए आने की बहुत इच्छा थी। परंतु बिचारे को बुखार आ जाता है बहुत ही दवा कराई पर बुखार उतरता ही नही भोजन खाते ही नही कमजोरी आ गई है फिर से बरसात बरसने लगा है उसमें वो किंस तरह आते ? बिचारे की आंख से आँसू आ गए मुझे कहते थे की मैं कक महाराज का दर्शन कर सकुंगा ?

बात सुनकर महाराजने भगुजी से कहा माणकी तैयार करो मैं बोटाद जा कर आवुं भगुजी ने दादा खाचर को जगाकर कहा के महाराज ऐसे तेज बरसाद में बोटाद जाने को तैयार हुए है।

दादा खाचर आकार कहने लगे की है महाराज ! ऐसे तेज बरसाद में जाने को रहने दो गली रास्तो में पानी नदी की तरह बह रहा है। रास्ते में भी पानी बहुत भर गया है आप पालकी में जाओंगे तो सर्दी हो जाएगी उस लिए

अभी जाने को रहने दो । सुबह बरसात धीमी हो जाएगी तो सुबह में चले जाना । सब लोगो ने बहुत समझाया पर फिर भी श्रीहरि खुद को निर्णय पे अटल रहे और कहा ना ना मुझे अभी ही जाना है । ऐसा कहते कहते उन्होने सिर पर पगडी रखी उपर बाँधी फिर मेरी चिंता करना नही मैं सुबह जल्दी आ जाऊँगा ऐसा कह कर चले गए ।

बोटाद पहुँचकर भगा दोशी के किवाड बजाए । भगत नेद रवाजा खोला और महाराज को देखा आश्चर्य चकित होकर भगा दोशी को कहा, भगाभाई देखो तो सही महाराज पधारे है । महाराज माणकी पर से उतरते है और अपनी बुफानी तथा पगडी माणकी पर रखकर भगा दोशी के पास आते है और पूछते है भगाभाई कैसे है ? बुखार नही उतर रहा ? भगा दोशी की आँख आंसुओ से भर आई । जबरन बैठने की कोशिष करते उन्होंने कहा, अरे मेरे बाप ! इतनी मुसलधार बारीश में आप यहाँ पधारे ! यह ऋण में कौन से जन्म में चुकाउगा । मेरे लिए आप कितने पहेशान हुए एसा कहते हुए बैठने की चेष्टा करते है लेकिन बैठ नही पाते ।

श्रीहरि बोले, भगाभाई आप सोते रहीए बेठने की जरुरत नही है । मैं बिलकुल परेशान नही हुआ । एसा कहकर महाराजने उसके सिर पर हाथ धुमाया और कहा आपका बुखार आज से गया । अब अच्छा हो जाएगा लेकिन गढपुर आना । जिस प्रकार आप मुझे याद कर रहे ते उसी प्रकार मैं भी आपको याद कर रहा था । आप बिमार हो यह खबर पाते ही मेरा मन आपकी मिलने बेचेन था इसीलिए मैं आपको मिलने आया । अब किसी प्रकार की चिंता नही करना सब ठीक हो जाएगा । लिजीए अब मुझे जाने की अनुमति दिजीए । गढपुर के भक्त मेरी चिंता कर हे होगे आप ठीक होकर गढपुर अवश्य आना । एसा कहकर श्रीहरि माणकी पर सवार होकर चलते बने तब भगा दोशीने सजल नयनो से कहा, हे महाराज ! पधारो बाप पधारना ।

श्रीहरि प्रातः गोपीनाथजी महाराज उठे उसके पहेल गढफुर पहोंच गए । बरसात भी रुक गया था ।

निज सुख अर्थे लोचन ही जब करत जगदीश
जन सुख अर्थे बियरत परमारथ पथ इश

अनु. पेईज नं. ९ से आगे

कार्य साख्यम् वा दहे यातमि का सिद्धांत मन में निश्चित कर रखा है, जिससे महा भयानक वन में जहाँ विकराल शेर भयानक बाधजंगलीमांसाहारी सुअर बडे बडे सिंग वाले हिरन, हाथी और भेडिओ के समूह वाले विस्तार में निर्भयतापूर्वक अकेले विचरण करते है और कभी भी अपनी इच्छा पूर्ति करने में सहायता रुपी धीरज का त्याग नही करते, हंमेशा भय होने के बावजूद धीरज का त्याग नही करते निर्भय रहते है । एसे वे परब्रह्म परमात्मा भगवान श्री स्वामिनारायण धर्मदेव की पुत्र के रुप में प्रगट होकर तपस्वी जैसा भेस धारण कर वनमें निवास करते प्रभु मेहेजब तप धर्म ज्ञान वैराग्य और भक्ति की रक्षा करे ।(७))

सदात्मदर्शी फलकन्दभोजनो वने निवासो यदि दुःखदः खलु ।
तथाऽपि तत्रापि सुखो महामतिः स वर्णिवेषोऽवतु धर्मनन्दनः ।।८।।

हमेशा सर्ध काल में स्वयं की आत्मा का चिंतन करते है । हमेशा फल, मुल और वृक्ष के पत्तो का आहार करते है । वन में रहना १३ मनुष् यके लिए अत्यंत दुःखदायक है फिर भी वर्णियज्ञ श्रीहरि को उसीमें आनंद आता है । वन में रहकर तपस्या करना और भगवान को खुश करना वही उनकी बुद्धी में है । एसै परब्रह्म परमात्मा भगवान श्री स्वामिनारायण धर्मदेव के पुत्र के रुप में प्रगट होकर तपस्वी की तरह वेष धारण करके वन में निवास करते प्रभु मेरे जप, तप, धर्म ज्ञान वैराग्य और भक्ति की रक्षा करो । (८)

श्री स्वामिनारायण म्युजियम

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

श्रीहरि स्वाभाविक चेष्टा

– प्रो. हितेन्द्रभाई नारणभाई पटेल

भगवान श्रीहरिने मनुष्य तन धारण कर जो जो लीलाए की थी उनका अति सुंदर यशोगान संप्रदाय के समर्थ नंद संतो ने किया है। श्रीहरि की दैनिक स्वाभाविक चेष्टा के पदो का गान प्रतिदिन रात अवश्य रुप से प्रत्येक मंदिर में होता है। इस चेष्टा के पद के जो प्रेमानंद स्वामी रचित है – जो गरबी राग में गाए जाते है। उनका गान श्रीहरिकी मूर्ति का स्मरण करके प्रतीतिपूर्वक किया जाए तो उसका फल दशम स्कंधके पढने सुनने जितना प्राप्त होता है। ऐसा बड़े संत बताते है।

जिस प्रकार श्रीहरिने शिक्षापत्री की रचना संस्कृत में की बाद में उसका मर्म बनाए रखकर उसी शिक्षापत्री की रचना, ब्रह्मानंद स्वामी, निष्कुलानंद स्वामी आदि संतोने अन्य भाषा में रखी। जिससे जिस तिस प्रांतकी भाषा जानने वाले भक्तजनो को उसका पठन करने में समजने में सुगमता रहे। इसी प्रकार, प्रेमानंद स्वामी द्वारा रचित चेष्टा के पदोको ध्यान में रखकर ज्ञानानंद स्वामीने उसकी रचना हिन्दी भाषा में की है।

ज्ञानानंद स्वामी स्वयं हिन्दी भाषी थे। आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादी के साथ अतिशय अनुराग प्रेम रखते थे और उनकी सेवा करते थे। स्वयं विद्वान होने के कारण चेष्टा के पदोका हिन्दी स्वरुप कीया जिसमें हिन्दी भाषी हरिभक्तो को अधिक सुगमता हो। इन पदोकी हस्त लिखित प्रत श्री स्वामिनारायण म्युजियममें सुरक्षित है। संप्रदाय के इतिहास में आज दिन तक अप्रकाशित रहे हुए इन पदो को प.पू. बड़े महाराजश्री की अनुमति से सभी को संप्रदाय के बौद्धिक विरासत का ध्यान रहे इस उद्देशय से यहाँ स.गु. ज्ञानानंद स्वामी की कृति शब्दसः प्रस्तुत की है।

राग रेखता पद-१

प्रगट हरिके में गुन गावे, चरन उर राखी चित्त लावे
महामुनि बसि करी मनको, ध्यान धरि रहत है जिनको ॥१॥
जिनोको भजत त्रिपुरारी, परम तप करत अविकारी
शेष नित रटत हे जिनको, पार नहि मिलत है तिनको ॥२॥
अगम करी निगम जसु गावे, जिनोको पार नहि पावे
सोई प्रभु फिरत तनु धारी, करत बहु चरित सुखकारी ॥३॥
हरिजीके चरति अधहारी, संभारत हे जे नरनारी
लगनमें मगन जे कोई, कहत ज्ञानानंद धन्य सोई ॥४॥

पद-२

जो प्रभुके चरित संभारे, अंतरमें मूरतिको धारे
सुनत सब दुख टरी जावे, व फरी भवमें नहि आवे ।१॥
चरित भगवतके अति भारी, कहकुं सुध होई मति मारी
सहज बेठत हरि जबही, तुलसी माला जपत तबही ॥२॥
तरक करी हसत वृषलाला, कोईककी मागी लेई माला
दोहरी करी द्वि द्वि मनि जोरे, जपत खेंचत माला तोरे ॥३॥
अलौकीक चरित अधहारी, सुनत चित्त देई नरनारी
लीला भगवतकी जीन गाई, कहत ज्ञानानंद सुखदाई ॥४॥

पद-३

बात करी तरकको करता, भेगी करी माला कर घसता
कोईक समे द्रग मुदि स्वामी, ध्यान धरी रहत है धामी ॥१॥
सुनो सब चरित भगवतको, सुनत सुख मिलत महाब्रतको
कोईक समे नयन ऊधारी, सबनको देखी सुखकारी ॥२॥
कोईक समे चमकत है स्वामी, निरखी दुख हरत बहुनामी
सभा आगे बैठी रही भारी, संत सब रहे है निहारी ॥३॥
ध्यान धरी बयठे है मुरारी, निरखी दुख मिटत हे भारी
संतजन भजनको गावे, कहत ज्ञानानंद सुख पावे ॥४॥

पद-४

निरखी हरिको चरित भारी, मगन सब संत नरनारी
तिनके संग चुटकी दई गावे, संत सब निरखी सुख पावे ॥१॥

कोईक समे गावे दई तारी, मगन होई फिरत बनवारी
संत आगे भजनको गावे, कथा आगे आप वचावे ॥२॥
आप करे वात सुखकारी, सुत देई चित्तन नरनारी
मनुष लीला बहु करत स्वामी, भक्त मध्ये बयठे बहुनामी ॥३॥
हरि समुजावे निजजनको, वचन कही सांत करी मनको
सांख्य योग शास्त्र सुनावे, रहस्य पंचरात्रकों कावे ॥४॥
मनुष सब देशके आवे, उछव पर पुजा बहु लावे
सेवक अपन जानि अविनाशी, ग्रहन करे पूजा सुखराशि ॥५॥
भक्त अपनेको भगवान, कराई ध्यान खेंचे नाडी प्रान
ध्यानमां ते उठावे निजजनको, कहत ज्ञानानंद धन्य तिनको ॥६॥

पद-५

देहमांही लावे ईन्द्रि प्रानको, वात करी समुजावे ज्ञानको
बयठे होये सभामें अविनाशी, कोईक जनने बोलावे पासि ॥१॥
हाथ अखियनसे करी सान, बोलावहि हितसे भगवान
मोहनके चरित सुखकारी, सुनत रहे मगन दुख टारी ॥२॥
कोईक वात करे संतन साथ, फुल मिंजे लई दोनु हाथ
सितल जानी हार गुलाबके, राखे द्रग उपरे दाबके ॥३॥
कोईक समे खुसीमां आवे, वात करी कथा वचावे
भजन सुनत कछु विचारे, कहत ज्ञानानंद उर धारे ॥४॥

पद-६

पूछनेको आवे जेमनेको कोई, चढावे हार पूजा करत कोई
कथा सुनते बिचमें बोलावे, तिनको बहु रिवजी रीसावे ॥१॥
मरम कथाको सुनत डोले, हरे हरे कहिके हसि बोले
कथा मिषे दुसरी क्रियामांई, जेमत हरे बोलाई जाई ॥२॥
समरति आवे आपको जबही, भक्त सामु देखी हसत तबहि
दिन दिन हरि सुख रस बरसावे, लीलाको जसु देखी संत गावे ॥३॥
सुनो सखी दिव्य मुरारी, चरित करे मनुष्य तनु धारी
मनोहर मोहन मन भायो, कहत ज्ञानानंद सुख पायो ॥४॥

पद-७

प्रगट किये चरित अतिभारी, देखत भये सुखित नरनारी
पलंग पर बयठे घनश्याम, विराजीत सुंदर सुखधाम ॥१॥
कोईक समे तखत विराजे, रुप देखी कोटी मदन लाजे
पलंग पर देखीके तकिया, उपर बयठे श्याम होये सुखिया ॥२॥
बहुत बेयठे तकीये पीठी दईके, जानु बांधी बयठे वसन लईके
कोईक समे राजी भगवान, मिलत हे श्याम सुजान ॥३॥
माथे धरे लई दोनो हाथ, छातिमां धरे पग दोनु नाथ
कऊको दियो हार गिरधारी, कहत ज्ञानानंद दुखहारी ॥४॥

पद-८

काऊको देवे चरन बनवारी, प्रसादी देवे काउको मुरारी
क्रपा करे भक्त पे स्वामी, वात करी समुजावे बहुनामी ॥१
चरित करे बहुत पवित्रकारी, गावे नित महामुनि संभारी
दांत बीच जीभको दबावे, दहिने बांये फेरवे सुभावे ॥२॥
छींक आवे तर्त वसन लेवे, छीक खात ते मुख पर देवे
तरक करीके हसत श्याम, हसावत सबको सुखधाम ॥३॥
कोईक समे वात करत देव, सुनत जन सब करत सेव
क्रपा बहु करत हे स्वामी, कहत ज्ञानानंद बहुनामी ॥४॥

पद-९

देखी दुख हरत हे जनको, परम सुख देत संतनको
कोईको दुख देखी दया लावे, अन्न धन देईके सुख पावे ॥१॥
क्रपा करी कही सुभग वानी, परम सुख देत जन जानी
दोउ कांधे वसनको धारी, चले मगजात विहारी ॥२॥
कोईक समे कर कमर धारी, चलत अति सोहत गिरधारी
विनोदिन लीला करी भारी, नीरखी तरी जात नरनारी ॥३॥
सहज सुभावे चले जावे, हेत करी सवन मन भावे
कोईक समे धोडे चढी जावे, कहत ज्ञानानंद मन भावे ॥४॥

पद-१०

संत सभामें जो हरि जावे, पीरसी करी संत जेमावे
बांये कांधे वसनको डारी, कमर कसी बांधे सुखकारी ॥१॥
पीरसे लाडु जलेबी घनश्याम, जेमनकी वस्तु लै तिनको नाम
फिरे बहुवार महाराजा, जेमावन संतनके काजा ॥२॥
भक्ति श्रध्धा बहुत पिरसता, देवे लाडु कोईके मुख हसता
राति रहे चारी घरी जबही, दतुनी करवा उठे हरि तबही ॥३॥
बयठी करी स्नान करे स्वामी, बहुत जल डाले बहुनामी
करत स्नान हरि जबही, देखत ज्ञानानंद नित तेही ॥४॥

पद-११

नाई करी खडे प्रभु होवे, वसनको करकरि निचोवे
सर्व तन पोछिके भगवान, पहिरे धोती श्याम सुजान ॥१॥
पिछोरी ओढी मखमलकी सारी, जेमनेको आवे सुंदर गिरधारी
पिछोरी ओढी बयठे हरि जेमवा, उधाडा करी कान मन गमवा ॥२॥
जेमत हरि जलेबी सारी, सुतरफेनी बरफी अधिक प्यारी

दुधपाक शीरापुरी ताजी, जेमत प्रभु होईके बहु राजी ॥३॥
जेमत बाँयो पग थिर धारी, उपर बाँयो कर धरे बनवारी
दहीनो पग राखी खडा श्याम, सोहत ज्ञानानंदको सुखधाम ॥४॥

पद-१२

सुखे जमे देवन के देव, वेराउवेर पानी पीवाकी टेव
भोजन कछु स्वाद जेमत आवे, पास बयठे हरिजन मनभावे ॥१॥
तिनोको देईके आप सोरवावे, जेमत प्रभु सबके मन भावे
जेमत हरि उडकारको खावे, उदर पर हाथ फिरावे ॥२॥
अचवन करे खडे होईके, दांत खोदे वदनको धोईके
पलंग पर बयठे भगवान, हरिजन देवे मुखमें विरिपान ॥३॥
केसरी चंदनको लई आवे, करत पूजा हरिजन भावे
दरशन करी पग लागी जावे, कहत ज्ञानानंद सुख पावे ॥४

पद-१३

मौंहन उपर पेंचको लईके, पगियाको बांधे सुंदर चित्त दर्दके
वरवारी तु सरद जब आवे, नदि धेला स्नान करन जावे ॥१॥
साथ हरिजन ले घनश्याम,नहावा जावे सुंदर सुखधाम
जलमें क्रिडा करत अति भावे, पानीमें तारी दई भजन गावे ॥२॥
स्नान करी वसनके धारी, घोडे चढी आवे गिरधारी
पवित्र जसु गावत जन आवे, प्रभुको देखी आनंदको पावे ॥३॥
गढपुरजन देखीके भगवान, सुफल करे लोचन मन प्रान
बिराजीत महोलमें आई, कहत ज्ञानानंद सुख पाई ॥४॥

पद-१४

मुमुक्षु जनके सुख काजा, प्रगट भये मोहन महराजा
धर्म घर धर्यो अवतार, किये बहु पतित भवपार ॥१॥
सभा करी बयठे भगवान, देत शिखावन जीवन प्रान
ज्ञान वैराग्य धर्म भक्ति, सिखावत सवनको विक्ति ॥२॥
बह्मरस वरसावे महाराज, त्रपत करि देवे सर्व समाज
वियारु करत सुखे श्याम, राति मही पोढत सुखधाम ॥३॥
भाल बिच अंगुरी फेरवे, तिलककी नाईसो धरवे
मागी करी मालाको लईके, जपत ज्ञानानंद चित्त दर्दके ॥४॥

पद-१५

परे नहि भूल सो कबहू, सहज ये ही नेम हे तबहु
पोठे करि निंद्रा भगवान, छुवत कोई आई आजान ॥१॥
चमकी जगही सुंदर श्याम, कौन पूछही पूरनकाम
हरिकी लीला बहुत अपार, कोईक गावे मति अनुसार ॥२॥
जो कोईक सिखे सुने गावे, परम भक्तिको सो पावे
लोक परलोक जहां जावे, तहां तहां सुजसको पावे ॥३॥
चरित मोहनके अविकारी, निरखी गायो में संभारी
कहत ज्ञानानंद नित देखे, जनम सुख सुफल करी लेखे ॥४॥

धनत्रयोदशी दिनांक ५-११-२०१८ सोमवार

प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हस्तो से लक्ष्मीपूजन संपन्न होगा । पाँच, दस और बीस ग्राम के प्रसादी के सिक्के म्युजियम से प्राप्त होगै ।

ता. ६-११-२०१८ मंगलवार श्री हनुमानजी का पूजन

प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से म्युजियम में प्रस्थापित प्रसादी के श्री हनुमानजीका विशेष पूजन दिनांक ६-११-२०१८ मंगलवार के रोज प्रातः ८-०० से ११-०० संपन्न होगा ।

रु।. ११००/- भरकर सपत्नी पूजा में बैठा जा सकता है ।

संपर्क : श्री स्वामिनारायण म्युजियम : ०७९-२७४८९५९७ तथा दासभाई मो. : ९९२५०४२६८६

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि-सितम्बर-१८

रु। २१,०००/-	एक सत्संगी हरिभगत, नूतन यज्ञशाला के निमित्, ह. संदिपभाई शेठ - अहमदाबाद
रु। १५,०००/-	चंद्रिकाबेन शुक्ल - नारायणपुरा, अहमदाबाद (वर्तमानमें ओस्ट्रेलीया) - ह. हर्ष शुक्ल
रु। ७,०००/-	मौलिक घनश्यामभाई गांगाणी (सुरत) - घुडकोट पहले वेतन के निमित्ते
रु। ५,५००/-	सुधीरभाई पी. पटेल - हर्षदकोलोनी - बापुनगर - ह. दासभाई
रु। ५,१२१/-	अ.नि.प.भ. मणीलाल लक्ष्मीचंद भालजा साहब के ११६ जन्मदिन निमित्त ह. प.भ. प्रबोधझाला तथा डॉ. निकुंज आरीवाला
रु। ५,१००/-	अ.नि. मोहनलाल शंकरलाल जोषी की स्मृति में ह. वसुमती कनैयाललाल व्यास - अहमदाबाद
रु। ५,०००/-	अ.नि. पुरुषोत्तमदास जीवाभाई पटेल - उवारसद ह. अरविंदभाई पी. पटेल परिवार
रु। ५,०००/-	अ.नि. राजेन्द्रभाई नेमचंदभाई सोनी - वस्त्रापुर - ह. बी.जी सोनी परिवार

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति का अभिषेक कराने वालों की नामावलि सितम्बर-१८

दि. ०२-०९-२०१८	श्री महिला मंडल स्वामिनारायण मंदिर कपडवंज - ह. सांख्ययोगी मंजुबा
	(साँय) उनावा मित्र मंडळ - ह. मनीषभाई पटेल
दि. ०४-०९-२०१८	वार्षिक पाटोत्सव निमित्त श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनीया
दि. ०९-०९-२०१८	राजेशभाई परसोत्तमदास पटेल (डांगरवा निवासी) (यु.एस.ए.)
	(साँय) श्री महिला मंडल स्वामिनारायण मंदिर (हवेली - कालुपुर)
दि. १९-०९-२०१८	घनलक्ष्मी कांति हालाई तथा वनिषा कांति हालाई - लंडन

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला २० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है।

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

भगवानने वरदान दिया

– शास्त्री हरिप्रियदासजी (गांधीनगर)

प्यारे बाल मित्रो ! आपने कभी एसा सोचा है कि भगवान वरदान मांगने का कहे तो क्या मांगना चाहिए । चलिए आज हम वरदान मांगने की बात करे ।

बात एसी है, स्वामिनारायण भगवानने सारंगपुर में पुष्पदोलोत्सव किया । इस प्रसंग पर रंगोत्सव पूर्ण कर महाप्रभु सभी संतो और भक्तो के साथ नदी पर स्नान करने पधारे । स्नान करने के बाद बडी सभा हुई । इस सभा में स्वामिनारायण भगवान कहते है – ''आज तो अत्यंधिक आनंद हुआ । मैं अति प्रसन्न हुं तो वरदान मांगो ।'' श्रीजी महाराज कहते है, बहनो ! पहेल आप मांगीए । बहने दो भाग में बैठी थी । पहला भाग था गुर्जरिया अर्थात् गुजरात से आई हुई बहने और दूसरा भाग था पांचालिका अर्थात् सौराष्ट्र के पश्चिम पंचाल की बहने । श्रीजी महाराज कहते है, बोलो जिसको जो चाहिए वह वरदान मांगीए ।'' सौराष्ट्र की बहनोने रुपए मांगे । रुपये मांगने के पीछे अच्छा भाव था कि यदि रुपए प्राप्त हो तो महाज आपकी, सत्संग की सेवा करेगे । इस लिए रुपए मांगे । बाद में बारी आई गुजरात की बहनो की । बहने कहती है, ''महाराज ! यह जग संपूर्ण दुःखी होता है । इसका कारण आपकी माया में बंधे रहना है । जग संपूर्ण आप की माया में लिप्त है इसलिए दुःखी होता है । गुजरात की बहने आज वरदान मांगती है । जिसका सत्संगिभूषण में वर्णन है । ऐसा ही वर्णन निष्कुलानंद स्वामीने भक्तचिंतामणि में किया है ।'' महाबलवंत माया आपकी, जिसमें लिप्त नरनारी, एसा वरदान दीजिए आप, वह माया हमको न छूए, और आपके बारे में कभी भी, मनुष्य मति में न आए, जो जो लीला आप करो, वह अलौकिक एसा ख्याल रहे ।'' हे महाराज ! जगत भर को परेशान करने वाली आपकी माया वह हमे आपकी भक्ति में, सत्संग में हानि न करे । एसी कृपा करना । हमे वह वरदान चाहिए की आपके बारे में कभी भी मनुष्य की बुद्धि में न आए । आप जो जो लीलाए करते हो वह अलौकिक है, दिव्य है । भक्त के सुख के लिए है । भक्तो के आनंद के लिए है ऐसा समझकर यह वरदान दीजिए ।

स्वामिनारायण भगवान कहते है, ''हे बहनो ! आफ सभी पर प्रसन्न हुँ । और आप दोनो भाग की बहनोने जो वरदान मांगे है वो वरदान सभी बहनो को दे रहा हूँ । मेरी माया आपको बंधन में नही रखेगी एसा यह बंधन रहित वरदान दे रहा हूँ। जो सभी बहनो को मिला । जो बैठा रहे उसका भाग बैठा रहे, जो चले उशका भाग भी चले । यह बहनोने माँगा इसलिए उन्हे मिला । इसी लिए तो कहते है कि ''माँगे बिना माँ भी नही देती ।''

मित्रो ! देखा ? कैसा अद्‌भूत वरदान गुजरात की बहनोने माँगा ! अभी बांत खत्म नही हुई । आगे पढो दूसरे वरदान की बात । श्रीजी महाराज सारंगपुर में जय जयकार कर रहे है । एसे में गढपुर से अभय राजा, दादा खाचर आदि महंत उन्हे लेजाने के लिए आए है इसी लिए महाराज जाने के लिए तैयार हुए । तब सारंगपुर के जीवा खाचर कहते है, हे महाराज ! हमें वरदान दिए बगैर जाओगे ? महाराज कहते है, बोलिए आप भी मांगो ! आपको जो वरदान चाहिए वह माँग लो । तब जीवाखाचर कहतेहै , महाराज ! मुजे तो एसा वरदान माँगना है, लेकिन कुछ संकोच हो रहा है । श्रीहरि कहते है बोलो बोलो, आपको जो वरदान माँगना हो वह वरदान माँगो और तुर्तही जीवा खाचर कहतेहै , महाराज ! मुझे तो यह वरदान चाहिए की हमारा यह सारंगपुर गाँव और सारंगपुर गाँव की सीमा अर्थात संपूर्ण जमीन पर किसी भी मनुष्य की मृत्यु हो वह आपके धाम में जाए और यम उसे लेने न आए ।

स्वामिनारायण भगवान कहते है जीवा खाचर तथास्तु ! आपको यह वरदान दिया । हमारा स्मरण करते हुए, हमारे लीलाचरित्र याद करते हुए, हमारा नाम स्मरण

करते हुए कोई भी जीव गाँव में या गाँव की जमीन पर जहाँ भी देहत्याग करेगा वह यमदूत के हाथो में नही जाएगा । महाराज एसा अद्‌भुत वरदान देकर गढपुर पधारते है।

मित्रो ! वरदान की बात पसंद आईने ? हा तो फिर आप भी सोच के रखना की भगवान वरदान मांगने का कहे तो क्या माँगना ? यद्यधिस्वामिनारायण भगवान में अटल श्रध्धा हो तो वरदान माँगने की आवश्यकता नही रहती कारण कि स्वामिनारायण भगवानने आश्रितो के सुखार्थ हमेशा के लिए सुख के वरदान दिए हुए है इसी लिए आनंद में रहकर भगवान का भजन करो और सदा सुखी रहो।

•

बगैर सौचे जल्दबाजी न करे

– नारायण वी. जानी (गांधीनगर)

महात्मा तुलसीदासजी की उक्ति है, ''दया धर्म का मूल है, पाप मूल अभिमान । तुलसी दया न छांडीए, जब लग घट में प्राण । शास्त्रो ने कहा है कि दयावान होना वह परम धर्म है। दया भाव निश्चित आवश्यक है। लेकिन पात्र-कुपात्र देखे बगैर की गई दया परेशानी खड़ी कर सकती है । आज हम यहाँ एक एसी ही बात पढेगे।

बहोत साल पुरानी यह बात है। एक छोटा गाँव था। गाँव में जनसंख्या अधिक थी । उसी में एक ब्राह्मण परिवार भी रहता था। इस ब्राह्मण की परिस्थिति सामान्य थी । यजमान वृत्ति द्वारा उपार्जित द्रव और भिक्षा से जो कुछ प्राप्त हो उससे अपने परिवार का लालन-पोषन करना । बच्चे बडे होने पर उनकी विद्याभ्यास इत्यादि के लिए अर्थ उपार्जन करना वह इस बाह्मर्ण का यक्ष प्रश्न था । उसने सोचा के मैं नजदीक के शहर में जाऊ और कुछ काम धंधा प्रारंभ करुं । उस में से जो दो पैसा प्राप्त होगे उसीसे आगे का जीवन सुखरुप गुजर सकेगा । उस समय वाहन युग नही था की जो बस स्टेशन जाकर बस में बैठकर, टिकट ले और जहाँ जाना हो वहाँ चले जाओ । उस समय तो कही भी जाना हो पेदल जाना पडता । ब्राह्मण तो चलता चलता शहर की और जाने लगा । रास्ते में एक विशाल जंगल आया।

कुछ कुछ डरते हुए वह ब्राह्मण जंगल में आगे बढता जाता है। अब वह बहोत ही थक चुका था। इसीलिए एक वृक्ष के नीचे उसने विश्राम लिया । विश्राम करने के बाद आसपास से फल और पानी द्वारा अपनी भुख प्यास शांत कर, पुनः चलना प्रारंभ करता है । ज्यो ज्यो वह ब्राह्मण जंगल में आगे बढता जाता है त्यों त्यों उसके अंदर भय बढने लगता है । एसे विद्वान जंगल में कोई जंगली जनावर आएगा तो ! मुझे खा जाएगा तो ! अदंर डर डोने के बावजूद वह धीरे धीरे ठोस कदमो से आगे बढता जा रहा था। वहाँ उसे शेर की गर्जना सुनाई दी। गर्जना सुनते ही पहले तो वह शेर नजदीक होने के डर से डर गया। बाद में उसे लगा कि शेर किसी बंधन में है और उसका डर कुछ कम हो गया।

आवाज जिस ओर से आ रही थी उस और वह आगे चला तो उसने देखा एक बड़े पिंजडे में शेर कैद था और गर्जना कर रहा था। ब्राह्मण अब निश्चित हो कर आगे बढता है। जैसे ही उस शेर के पिंजडे के पास आता है वह कैदी शेर गरीबसा मुँह करके ब्राह्मण को विनती करने लगा। है भूदेव ! मुझे इस पिंजडे में से बाहर निकालो। मैं आपका एहसान जीवनभर नही भुलुगा। पहले तो ब्राह्मण तैयार नही हुआ लेकिन शेर ने बहोत ही विनती की । बहुत विनम्रताभरी बिनती की जिससे दयालु स्वभाव के ब्राह्मण को शेर पर दया आ गई और उसने पिंजडे का दरवाजा खोल दिया।

पिंजडे का दरवाजा खुलते ही शेर तो बाहर आ गया । वह शेर बहोत दिनो से पिंजडे में कैद था जिससे अति भुखा था। और वह तो जिसने उसे इस पिंजडे मे से बाहर निकाला, जिसने उस पर दया की एसे उस ब्राह्मण को खा जाने के लिए तैयार हो गया । यद देख ब्राह्मण कहने लगा ''हे वनराज ! आपने मुझे वचन दिया था कि आप मुझे नही मारोगे, मेरा एहसान नही भूलोगे। लेकिन अब बाहर निकल कर आप क्यो पलट गए ?

निर्भय हुआ शेर कहने लगा, वचन कैसा ने बात कैसी। हम तो जंगल के राजा कहलाते है। इसी लिए हम तो हमारी मरजी के अनुसार वर्तन करते है। हम को कौन कहने

वाला है । मैं तो तुझे खाने वाला ही हुँ । अब, वह ब्राह्मण अपनी गलति पर पश्चाताप कर पुन: रोने लगा । ब्राह्मणने कुछ सोचकर एक उपाय सोच कर कहा, वनराज ! हम कोई तिसरी व्यक्ति के पास जाकर अपनी बात बताकर अपना न्याय करवाए । वो जो फैंसला करे उसे हम स्वीकार करेगे ।

शेरको ब्राह्मणकी यह बात उचीत लगी ! उसने तिसरी व्यक्ति के पास न्याय कराना तय किया । इतने में वहाँ से एक सियार गुजरता है । शेर और ब्राह्मण सियार के पास जाकर संपूर्ण घटना प्रस्तुत करते है और सियार को सच्चा न्याय करने को कहते है । सियार ब्राह्मण की और देखकर समज गया कि शेरने ब्राह्मण को फसा लिया है । उसने तुरंत ही उपाय ढूंढ लिया ।

सियार कहता है ''वनराज ! यह जो घटना घटी उसे मैं प्रत्यक्ष देखना चाहता हूँ । यदि एसा हो तो ही मैं सच्चान्याय कर पाउगाँ ।'' शेर तो सियारकी बात में आ गया और तुरंत ही पिंजडे में गया । शेर जैसे ही पिंजडे में गया कि सियार तुर्त ही ब्राह्मण को इशारा कर पिंजडे का दरवाजा बंधकरने को कहताहै । ब्राह्मण भी पल भर की देरी किए बगैरा दरवाजा बंधकरता है ।

शेर पुन: पिंजडे में कैद हो गया और ब्राह्मण सियार को उसकी जान बचाने के लिए धन्यवाद करने लगा । दोनो खुश होकर आगे चलते है तब सियार कहता है । ''ब्राह्मण ! दया करना अच्छी बात है पर अयोग्य व्यक्ति पर, दुष्ट पर कभी भी दया करती नही । यदि बगैर सोचे दया करे तो बड़ी मुसीबत आ जाती है ।

मित्रो ! देखाने बगैर सोचे दया करने में कैसी विपदा आ जाती है । इसी लिए देवानंद स्वामी ने कहा है कि

"विवेकी मनुष्य को एसा सोच कर देखो"

श्री स्वामिनारायण मासिक नवंबर-२०१८ केलेन्ड के रुप में प्राप्त होगा

श्री स्वामिनारायण मासिक के सभी सदस्यो को यह जानकारी दी जा रही है कि श्री स्वामिनारायण पत्रिका नवंबर-२०१८ में आपको केलेन्ड स्वरुप में प्राप्त होगी । दिसंबर-२०१८ की पत्रिका दिसंबर महिने में प्रकाशित होगी । जिसकी जानकारी सभी हरिभक्त ध्यान रखे ।

दीपोत्सव कार्यक्रम

आश्विन शुक्ल-७ बुधवार दि. ३१-१०-१८ को पुष्य नक्षत्र होने से हिसाब लिखने के रजिस्टर खरीदने का मुहूर्त अच्छा है ।

धनतरेस : आश्विन कृष्ण-१३ सोमवार दि. ५-११-२०१८ महालक्ष्मी पूजन प्रात: ६-३६ से ११-०० तक, १३-४१ से १९-३५ तक, रात्रि २२-४७ से २४-२५ तक

काली चौदश : आश्विन कृष्ण-१४ मंगलवार दि. ६-११-२०१८ हनुमानजी महाराज का पूजन सायंकाल ७-०० प.पू. आचार्य महाराजश्री के वरद् हस्त से।

दीपावली : आश्विन कृष्ण-३० बुधवार दि. ७-११-२०१८ समूह शारदापूजन-चोपडा पूजन सायंकाल ७-३५ बजे अमदावाद कालुपुर मंदिर के सभा मंडप में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों विधिवत संपन्न किया जायेगा ।

नूतन वर्ष सं. २०७५ : कार्तिक शुक्ल-१ गुरुवार दि. ८-११-२०१८, गोवर्धन पूजा

मंगला आरती प्रात: ५-०० बजे ।

शृंगार आरती प्रात: ६-३० बजे ।

अन्नकूट रचना (दर्शन बंद) प्रात: ९-१५ से १२-०० बजे तक ।

राजभोग आरती प्रात: १२-०० बजे ।

अन्नकूट दर्शन दोपहर १२-०० बजे से ३-३० बजे तक ।

श्रीहरि के ६ठ्ठे, ७ वें तथा ८ वें वंशज के हाथों से संपन्न होगा । नूतन वर्ष को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कालुपुर मंदिर में अपनी आफिस में सभी को दर्शन देंगे ।

सूचना : समूह शारदा पूजन में लाभ लेने वाले भक्त अपनी बही लाल कलर में कपड़े में पता-फोन-मोबाईल नंबर लिखकर मंदिर की आफिस में ४००/- रुपये भरकर रसीद प्राप्त करलें ।

(श्री कमलेशभाई गोर)

भक्तिसुधा

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से)
(एकादशी सत्संग सभा प्रसंग पर कालुपुर मंदिर हवेली) "आत्मा का स्वभाव ज है उर्ध्वगति"
(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

हर एक जीवन का एक ही लक्ष्य है, भगवान की प्राप्ति क्योंकि आत्मा का स्वभाव ही है उर्ध्वगति । परंतु हर एक व्यक्ति को ज्ञान नही है की सच्चा सुख कहाँ है । इसके लिए हर व्यक्ति खुद के मतानुसार सुख के पीछे भागता है । सामान्यरुप से देखे तो हर एक जीव जन्मता है वही से मृत्यु तक खुद के पास जो है उससे अधिक सुख.... क्योकि प्रत्येक आत्मा का प्राकृतिक स्वभाव ही है कि ऊपर उठना । प्रत्येक जीव जहाँ है वहाँ से उपर उठने के लिए प्रयत्नशील है । परंतु हर एक व्यक्ति के शरण में हैं तो जीव वहाँ तक पहुँच जाता है परंतु हमें तो घर बैठे ही सब मिल गया है । तो हम अपने बेटे-बेटियो को बचपन से ही अच्छे संस्कार दे तो जीवन में उनको कोई परेशानी नही आती क्योंकि भक्ति का बीज सब के अन्दर होता है । बहुत जगह हम देखते है, सबने देखा होगा कि दिवार के अन्दर से पौंधा निकलता है तो पत्थर मे तो पानी होता नही तो भी बीज वहाँ गिर गया हो तो उसको पानी मिल जाए या बरसात का पानी मिल जाए तो अन्दर से पौंधा उग जाता है । तो जो पौधा दिवार पर उगता है उसको पुरा पोषण नही मिल पाता क्योंकि लोग उसको काट देते हैं दिवार को नुकशान ना हो जाए ।

अपने अन्दर भी सत्संग के माध्यम से जो पोषण मिल हा है उसके कारण अन्दर भक्ति रुपी बीज अन्तरात्मा में उग जाता है उसे भी लोग..... काटना चाहते है तो अतरात्मा मे सत्संग के बीज फूटे हे वे सुक ना जाए इस के लिए उकी देखभाल करनी पडती है उस का ध्यान रखना पडता है । इसके लिए निश्चय और निष्कामी १००% शरणागत होना है । १००% सच्चे सत्संगी बनने के लिए क्या करना पडता है ? हम कही जा रहे हो और जानने लायक जगह आए तो बहार से बोर्ड देखा हो और कोई व्यक्ति गाँव में धुमकर आए और तीसरा व्यक्ति सप्ताह भर गाँव में रुक कर पूरा गाँव देख के आए । फिर कोई पूछे के यह गाँव आपने देखा है ? तो जिसने सिर्फ बोर्ड देखा वो भी कहेगा की देखा है । और जो खाली धूमकर आया वो भी कहेगा देखा है । और जो सप्ताह भर रुक आया है वो भी कहेगा देखा है परंतु वास्तव में किसने देखा है ? तो जो सप्ताह भर रुक कर सब देख के आया है उसे देखा हुआ कहते है । हम किसी को पूछते है कि आप सत्संगी हो तो जवाब मिलता है कि हमारे दो पीढी से सत्संग है । लेकिन बहुत बार देखे तो गले में कंठी भी नही होती यह सब होता है तो भगवान के वचनो और नियमो का पालन नही होता है । तो यह नही करना है । १००% पालन करना है कंठी तिलक हिंदी करना जरुरी है यह तो अनिवार्य है हम शरणागत हुए है इसलिए उनके सिवाह रह नही सकते परंतु इसके साथ अन्तरातमा को सत्संगी बनाना है । इसके लिए पूर्ण समर्पण चाहिए हमे ऐसा लगे कि हम समर्पित हो गए परंतु सम्पूर्ण समपर्ण होना अधुरा है । कोई व्यक्ति चाहे जितना विद्वान हो तो भी संपूर्ण समर्पण नही हो सकता परंतु भगवान अपने प्रेम, समर्पण से वश में होकर अपने नजदीक आते है । हम अपने समय महाराज की पूजा करते है उनको जब भोग लगाये । एक दिन में कितनी बार महापूजा होती है । हम कितनी बार महाराज का अभिषेक करते है हमे उन्हे पानी में ही खडे रखे तो वह तो भगवान उनहे कुछ नही होता पर कहने का तात्पर्य यह है कि हम भगवान के प्रति समर्पित है इसके ज्यादा भगवान अपने प्रति समर्पित है । तो इतना खास ध्यान रखना है कि सत्संग में वापिस आगे बढना है ।

महाराज ग.प्र.प्र. के २८ में वचनामृतमें कहा है कि जो सत्संगी सत्संग में से वापिस आता हो तो... उसको पहले दिन तो सत्संग मात्रि अवगुण आते हैं और खुद के हृदय में यह जानते है सभी सत्संगी तो असमझ है और मैं समझता हूँ

। सभी से अधिक खुद को जानते है और रात दिन खुद के हृदय में दु:खी रहें और दिन में कोई सुख न हो और रात में सोते है तो निंद भी नही आती और क्रोधतो कभी मिटता भी नही और अघ जली लकडी की तरह जलता रहे और वेसा होता है कि जितने दिन सत्संग में रहते है परंतु उनके हृदय में किसी भी दिन सुख नही आता और अंत में वापिस आ जाता है। फिर उसको दिन दिन सत्संगी मात्र हृदय में गुण ही आता है और सभी भक्तो को बड़ा समझता है और अपने को कम समजता है और आठो पहर उसके हृदय में सत्संग का आनंद ऐसा लक्षन हो तो जान ते है। तो खास ध्यान रखना है कि जब भी सत्संग में आगे बढना है तो शुभ... बुद्धि होती है। और दूसरे को सच्चा सत्संगी मानकर सम्मान दे, बडा समझकर तो अपने को वैसा केसे पता चलेगा की यह सत्संगी बडा है। और कौन सच्चा सत्संगी है। कोई व्यक्ति कितना बड़ा है उसका कोई थर्मोमीटर अपने पास नही है तो सच्चे सत्संगी का अपमान न हो जाए इसके लिए मंदिर में जो आते है उनको छोटा नही समझना है। कोई कितना कर के आया हे इसकी अपने को खबर नही है। इसके लिए किसी का अपमान नही करना है। सभी को समान अधिकार है। निश्चय करो कि मैं इस स्थान पढा है तो मेरा भगवान के ऊपर ज्यादा अधिकार है। मेरे से किसी कि हानि हो जाए तो मुझे भी दोष लगे। सत्संग में लगातार आगे बढना और भक्ति रुपी बीज कभी सूखे नही उसका सतत ध्यान रखना है। दुनिया में चाहे जिस कोने से जाओ पर श्री नरनारायणदेव के दर्शन करके जेसी शांति मिलती है वैसी कही नही मिलती मूर्ति के दर्शन करे तो सब भूल जाते है।

•

मंदिर किस लिए

– लाभुबेन मनुभाई पटेल (कुंडाल, तह. कडी)

भगवन्मन्दिरं सर्वैः सायं गन्तव्यमन्वहम्।
नाम सकीर्तनं कार्य तत्रौच्चै राधिकापतेः॥६३॥(शिक्षा.)

अर्थ : सर्वस्तंसगी नित्य सायंकाल में भगवान के मंदिर जाए

श्री राधिकाजी के पति श्रीकृष्ण भगवान का नाम उच्चारण करके कीर्तन करे।

मंदिर मनुष्य के मन में शांति और सद्भावना की प्रेरणा देता है। सिनेमा देखने से मन विकृत होता है। तो मंदिर जाने सुसंस्कृत बनते है। मंदिर भारतीय संस्कृति का प्रतिक है। यात्रा का तीर्थधाम है। मंदिर में घडीभर बैठने से ही चित्त में उन्नत विचार आते है। मन एकाग्र होना चाहिए। मंदिर जाने का चित्र में ललक रखो। मनुष्यत्व के लिए यह सच्चा रास्ता है। चित्त में ललक ना हो तो जीवन भर मनुष्य दिशाहीन बन कर भटकता है। जैसे शिक्षण के लिए विद्यालय दर्द निवारण के लिए होस्पिटल की आवश्यकता होती है वैसे ही अध्यात्मज्ञान के लिए मंदिर की आवश्यकता होती है। मंदिर यानी ऐसा स्थान जहाँ गरीब अमीर अशिक्षित विद्वान, ऊचृनीच सभी खुद के बाह्य रुप को ऊतार भगवान समक्ष एक ही ही भाव से उपस्थित होत है। ऐसी समझ है। राग, द्वेष कम होता और प्रेमभाव फैलता है। मंदिर की रचना मे जो ऊपर जो धुम्मट होता है तो ध्वनि की शक्ति को ध्यान में रख कर उसकी रचना की गई है। खुली जगह में मंत्र की ध्वनि आकाश में लीन हो जाती है परंतु गोल धुम्मट नीचे बैठकर मंत्र का उच्चारण करने से वह वापिस अपने पर बरसता है। जितना धुम्मट गोल उतनी प्रतिध्वनि सरल यह ध्वनि अनेक गुणाशक्ति के साथ अपने पर बरसती है। परिणाम स्वरुप अलौकिक आनन्द मिलता है। दिव्यता का प्रवेश होता है। दूसरे विचार दूर होते है मन शांत होता है ध्वनि के अनेक प्रयोग द्वारा यह साबित हो चुका है।

श्रीजी महाराज ने विचार के उन्होने शास्त्रो, आचार्य और मंदिर कराये जिनमें श्रीहरि की सर्वोपरी उपासना प्रर्वतमान हो। शास्त्र कर उसमे पुष्टि होती है।

श्री स्वामिनारायण मासिक में प्रसिद्ध करने के लिये लेख, समाचार एवं फोटोग्राफ्स ई-मेईल से भेजने के लिए नया एड्रेस
magazine@swaminarayan.in

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में जलझुलिनी श्री गणपतिजी का वरघोडा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की पूर्ण कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से और समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से स.गु. महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदाजी की प्रेरणा मार्गदर्शन से भादरवा सुद-११ जलझूलमनी एकादशी ता. २०-९-१८ को गुरुवार के दिन श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में परंपरागत श्री गणपतिजी का वरघोडा धूमधाम से निकला प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के शुभ निश्रा में श्री नरनारायणदेव ओच्छव मंडल ओरिजनल तबला, धोलक, शरणाई, मंजीरा के ताल श्रीहरि के पदो का गुणगान करते भव्य धून की रमझट बोलकर मंदिर के भव्य चोक में अलौकिक उत्सव हुआ वहाँ जो नारायणघाट मंदिर प.पू. लालजी महाराजश्री के कर कलो से ठाकोरजी को महापवित्र साबरमती नदी में नौकिवाहर कराके भव्य धून की रमझट करके आरती उतारी थी । उसी तरह सायं श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में चोक में प.पू. आचार्य महाराजश्री की निश्रा में मंडल भव्य रासलीला किया । शहर के विशाल संख्या में भाविक भक्तो आए दिव्य दर्शन करके धन्य भागी बने। (कोठारी शा. नारायणमुनि स्वामी)

कालुपुर में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी मनाई

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के शुभ सानिध्य में प्रसादी के विशाल चोक में श्रावण वद-८ श्री कृष्ण जन्माष्टमी रात्रि ८ बजे से १२ बजे भव्य कीर्तन भक्ति और रास गरबा हुए रात १२ बजे श्री कृष्ण जन्मोत्सव की आरती धूमधाम से हुई । समग्र प्रसंग में कोठारी जे.के. स्वामी, हरिचरण स्वामी (कलोल), जे.पी. स्वामी, शा. मुनि स्वामी, भक्ति स्वामीने सुंदर आयोजन किया ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया रामबाग

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की पूर्ण कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से और समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से स.गु. महंत स्वामी धर्मस्वरुपदासजी तथा स.गु. शा.स्वामी वासुदेवचरणदासजी की प्रेरणा मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया बिराजमान श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज और श्री घनश्याम महाराज के शुभ सानिध्य में श्रावण मास को भव्य हिंडोला दर्शन, अमास के श्री महारुद्र एकादशी श्री गणपतिजी वरघोडा बहुत धूमधाम पूर्वक निकला । जिसमें संतो के साथ हजारो हरिभक्त जुडे अलौकिक उत्सव मनाया गया । (श्रीजी स्वामी - कांकरिया)

श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुरधाम जलझुलनी उतसव

परमकृपालु श्री रेवतीबलदेवजी हरिकृष्ण महाराज की छत्रछाया और प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से एवम् समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा जेतलपुरधाम पूज्य महंत स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा पू. पी.पी. स्वामी और ठाकोरजी के पुजारी ब्र. स्वामी पूर्णानंदजी के मार्गद्रशन अनुसार भादरवा सुद-११ जलझुलनी एकादशी उत्सव धूमधाम से मनाया । निज मंदिर में बलदेवजी महाराज सन्मुख परम्परागत आयोजन मंडल द्वारा सर्व प्रथम आयोजन कर भजन की प्रस्तुति के साथ श्रीहरि को पालखी में बैठाकर पूजा, अर्चना, आरती कर के मंदिर में से भुदेवो, संत, हरिभक्तो के विशाल समूह के साथ प्रयाण किया । इस दिन जेतलपुर गाँव में भव्य लोकमेले का आयोनज किया गया । ठाकोरजी की पालखी गाँव के मुख्य बजार पहुंची तो रामजी मंदिर से भगवान श्री राम पालकी में बिराजकर मुख्य बाजार पहुंचे दोनो पालकी के साथ गाजते कीर्तन प्रस्तुत करते देव सरोवर और फुलवाडी पहुँच कर हरिमंदिर में पूजा अर्चना की भगवान को जलझुलणी से स्नान कराया । उसके बाद आरती करके काकडी का प्रसाद चढा कर सब भक्तों को बाँटा गया । उसके बाद गाँव में पालखी घर घर पधराई गई जैसे श्रीहरि जेतलपुर में १००-१०० बार घर घर पधरामणी करी । यह परम्परा आज भी चल रही है । हरिभक्तो को भी भगवान घर घर पधारे उसका आनंद होता है । पूरे दिन पालकि में धूम कर महाराज को

रात्रीवास यजमान के घर कर के वहाँ उत्सव किया । समग्र व्यवस्था का सुंदर आयोजन जेतलपुर मंदिरके युवा महंत स्वामी के.पी. स्वामीने किया ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर अंजली

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की पूर्ण कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से और समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत स्वामी विश्वप्रकाशदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर अंजली में पवित्र श्रावण मास में कथा का सुंदर रसपान पूज्य भक्तिनंदन स्वामी ने कराया । श्रीकृष्ण जन्माष्टमी भी धूमधाम से मनाई गई । भादरवा सुद-५ को श्री गणपतिजी का उत्सव आरती पूजा विधिवत रुप से किया भादरवा सुद-८ को राधाष्टमी की आरती उतारी गई । भादरवा सुद-११ जलझुलनी एकादशी उत्सव संत-हरिभक्तो ने धूमधाम से कीर्तन भक्ति कर के मनाया । इस विस्तार में रहने वाले हरिभ्कतोने इस उतसव के दर्शनक र बहुत धन्य बने । (कोठारीश्री अंजली मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मांडल पचान्ह पारायण

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की पूर्ण कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से और समग्र धर्मकुल की सहमति से फिर जेतलपुरधाम पूज्य स.गु. महंत शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा पू. स.गु. शास्त्री पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर मांडल में ता. १०-९-१८ से १४-९-१८ तक श्रीमद् सत्संगिभूषण ग्रंथ की पंचान्ह पारायण स.गु. शा. स्वा. भक्तिनंदनदासजी (अंजली मंदिर) के वक्तापद से धूमधाम से सम्पन्न हुई । कथा अन्तर्गत श्री गणेश चतुर्थी के श्री गणपतिजी का पूजन, अर्चन और सुंदर अन्नकूट दर्शन आरती विधिवत रुप से कि गई । उसके बाद दूसरे दिन श्री महादेवजी का पूजन रुद्रपाठ द्वारा फुलो के विविधरसों से कराई गई । समूह आरती में कथा के यजमान प.भ. चंद्रकांतभाई भगवानदास पटेल के सुपुत्र मेहुल, प्रतिक, आदि परिवार ने लाभ लिया । इस प्रसंग में जेतलपुरधाम से संतो आये थे । जिस में पू. महंत स्वामी आदि संत मंडल ने सभी भक्तो को आशीर्वाद दिया प्रसाद बाँटी । इस प्रसंग में भोजन प्रसादकी व्यवस्था युवक, बुढे हरिभक्तो और बहनो की सेवा प्रेरणारुप थी । कथा प्रसंग में डॉ. सवजीभाई पटेल के नए मकान में पू. भक्तिनंदन स्वामी ने विधिवत रुप से महापूजा कराई । उसी प्रकार कालीयाणा गाँव में देव धर्मकुल के निष्ठावान प.भ. डाह्याभाई बूटीया के वहाँ भी विधिवत ढंग से महापूजा कराई गई । ता. १३-८-१८ के दिन कथा में विरमगाम श्री स्वामिनारायण मंदिर में भव्य सत्संग सभा का आयोजन किया गया । जिस में पू. भक्ति स्वामीने कथामृत पान कराया । विशाल संख्या में मुमुक्षुओ कथामृत पान कर धन्य बने ।(कोठारीश्री मांडल)

भक्तिनगर (मेमनगर) श्री स्वामिनारायण मंदिर में त्रिदिनात्मक रात्री कथा पारायण

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की पूर्ण कृपा से अपने मेमनगर भक्तिनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. २८-८-१८ से ता. ३०-८-१८ के बीच वचनामृत-२७३ पैकि के लोया प्रकरण-३ की हरिभक्तो के चरित्र आखअयान की त्रिदिनात्मक कथा पू. शा. चैतन्य स्वामी (गांधीनगर) के वक्तापद पर हुई कथा के दरम्यान स.गु. विश्वविहारी स्वामी आदि संतो पधार्या, अन्तिम दिन कालुपुर मंदिर से कोठारी शा. मुनि स्वामी तथा गांधीनगर मंदिर के महंत पू. शा. पी.पी. स्वामी आदि संत मंडल आके खुद की अमृतवाणी द्वारा श्रीहरि की लीला चरित्र की बाते करी । तीनो दिन मेमनगर और आजूबाजू के कथा प्रेमी भक्त इस कथा मृत पान करके धन्य बने । (श्री स्वामिनारायण मंदिर युवक मंडल मेमनगर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बालासिनोर

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की पूर्ण कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर बालासिनोर में ता. २६-८-१८ से ता. ३-९-१८ तक शा.स्वा. घनश्यामदासजी की वक्तापद श्रीमद् सत्संगिजीवन नवान्ह पारायण का समग्र गाँव के भक्तो की रसपान किया स्वामी केशवचरणदासजी श्री नरनारायणदेव और धर्मवंसी की महिमा की बाते करी । श्री नरनारायणदेव मंडल हिंडोला का सुंदर आयोजन किया । जन्माष्टमी में रात १२ बजे श्रीकृष्ण जन्मोत्सव मनाया ।(मधुकरभाई त्रिवेदी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर डांगरवा (वांटो) - तलपद

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की पूर्ण कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर डांगरवा (वांटो) खाते ता. २५-८-१८ से २७-८-१८ तक श्रीमद् भागवद दशम स्कंधपारायण शा. स्वा. माधवप्रियादसजी चातुर्मास के दरम्यान करी । डांगरवा गाँव के हरिभक्त कथा श्रवण करके धन्य बने ।

तणपद श्री स्वामिनारायण मंदिर में चातुर्मास के दरम्यान शा. स्वा. माधवप्रियदास ''सद्गुरु स्वामी'' आरती कथा का सुंदर रसपान किया गाँव के सभी भ्तोने कथा का लाभ लिया । (कोठआरीश्री डांगरवा-वांटो)

श्री स्वामिनारायण मंदिर टांकीया

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की पूर्ण कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से ता. २१-८-१८ से ता. २५-८-१८ तक टांकीया श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्रीमद् भागवत दश्म स्कंधपंचान्ह कथा शा. स्वामी माधवप्रियदासजी के वक्तापद रात्री ८ से ११ बजे जिसमें गाँव के सभी हरिभक्त कथा का अलौकिक लाभ लेके धन्य बने ।(कोठारीश्री टांकीया)

श्री स्वामिनारायण मंदिर धरमपुर (खारवरीया)

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की पूर्ण कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर धरमपुर (खाखरीया) में श्रावण मास में ता. २९-८-१८ से ता. ३-९-१८ कालुपुर मंदिर से स.गु. स्वामी बालकृष्णदासजी गुरु स्वामी श्रीहरिदासजी ने श्रीमद् सत्संगिजीवन महाग्रंथ की रात्री कथा गाँव के सभी हरिभक्तो को सुनाई । हरिभक्त कथा सुनकर बहुत प्रसन्न हुए । (कोठआरीश्री कानजीभाई - धरमपुर)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली श्रीकृष्ण जन्माष्टमी समैयो

मूलीधाम निवासी श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से और समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से मूली मंदिर के महंत स.गु. स्वामी श्यामसुन्दरदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली में श्रीहरि प्रगटावेल जन्माष्टमी का परमम्परागत समैयो बहुत धूमधाम से मनाया । पूरे श्रावण मास में श्रीमद् भागवत दश्म स्कंधकी कथा शा.स्वा. घनशअयामप्रकाशदासजी के वक्तापद पर हुई ।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी की प्रासंगिक सभा में कथा की पूर्णाहुति पू. वडील संत और हरिभक्त द्वारा हुई । इस प्रसंग में धूमधाम से संत सांख्ययोगी बाइयो और हरिभक्त पधार्या रात्र १२-०० बजे जन्मोत्सव आरती पू. महंत स्वामी उतारी । सभा संचालन श्री शैलेन्दर्सिह झाला ने सुंदर प्रका से किया और सेवा में कोठारी स्वामी हरिकृष्णदासजी, जे.के. स्वामी और भरत भगत आदि जुडे ।(शैलेन्द्रसिंह झाला)

श्री स्वामिनारायण मंदिर सुरेन्द्रनगर हिंडोला कथा पारायण

मूलीधाम निवासी श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से और समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा अत्रे मंदिर महंत स.गु. स्वामी प्रेमजीवनदसाजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर सुरेन्द्रनगर में श्रावण मास में अवनवा कलात्मक हिंडोला बनाकर श्रीहरि को झुलाया गया । सभा मंडप में प्रद्रशन रुप में एक साथ बारह हिंडोला अलग अलग बना कर दर्शन के लिए खुले रखे । सुरेन्द्रनगर शहर और आसपास गाँव के अनेक हरिभक्त दर्शन कर धन्य बने । श्रावण वद-७ से श्रावण वद-अमास पर्यन्त श्रीमद् सत्संगिजीवन तथा श्री पुरुषोत्तमप्रकाश ग्रंथ की कथा स.गु. स्वामी त्यागवल्लभदासजी तथा स्वामी सत्संगसागरदासजी के वक्तापद पर नियुक्ति कि । समग्र सस्तंसग का सभा संचालन शा.स्वा. प्रेमवल्लभदासजीने किया ।

दोनो आयोजन स.गु. कोठारी स्वामी कृष्णवल्लभदासजी ने किया ।(झाला शैलेन्द्रसिंह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर चुडा में त्रिदिनात्मक कथा पारायण

मूलीधाम निवासी श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से और समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से सुरेन्द्रनगर मंदिर महंत स.गु. स्वामी प्रेमजीवनदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर चुडा में श्रावण मास में ता. २३-८-१८ से ता. २५-८-१८ तक त्रिदिनात्मक कथा स.गु. स्वामी त्यागवल्लभदासजी तथा स.गु. स्वामी सत्संग सागर दासजी के वक्तापद पर गाँव के सारे हरिभक्तो ने कथा सुनकर धन्य बने । सभा संचालन सत्यस्वरुप स्वामीने किया । (शैलेन्द्रसिंह झाला)

विदेश सत्संग समाचार

अमेरिका में देवस्य का भूमिपूजन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव देश ताबा में आई.एस.एस.ओ. संस्था द्वारा वार्जिनिया स्टेट में रिचमूंड एरपोर्ट के पास वाले विस्तार में प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के अलौकिक संकल्प 'देवस्य' का भूमिपूजन ता. ११-८-१८ से १२-८-१८

शनि-रवि के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री, प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री, पू. बिन्दुराजा, पू. श्रीराजा और दोनो भाणेज श्री सुव्रतकुमार और श्री सौम्यकुमार की शुभ उपस्थिति में भव्यातिभव्य प्रकार सम्पन्न किया । इस अवसर पर रंगोत्सव, महापूजा, जलपाना, लेईक अभिषेक रास गरबा और महाप्रसाद का सुन्दर आयोजन किया आई.एस.एस.ओ. के कार्यावाहक कमिटि सभ्य और युवानो ने साथ मिलकर किया । यु.के., ओस्ट्रेलिया, न्युजीलैंड, अफ्रिका, इन्डिया आदि अपने देश विदेश के अनेक मंदिरो के तथा अत्रे का आई.एस.एस.ओ. चेप्टर के हरि भक्तोने आकर समग्र ध्रमकुल के द्रशनक र उत्सव में सहभागी बने इस प्रंसग में सेवा देने वाले हपिभक्त प.पू. आचार्य महाराजश्री रुडा आशीर्वाद देकर सन्मानित किया था । तमाम सेवा करने वाले हपिभक्तो और रसोई की सेवा में शिकागो, चेरिहील, मेरीलेन्ड, डी.सी. और कोलोनीया के हरिभक्तोने तीन दिन तक महाप्रसाद आदि सेवा निष्ठा से करी ।

अपने अत्रे संत और भारत से आए संतोने 'देवस्य' में येनकेन प्रकार सेवा करने वाले को आर्शिवाद दिया । सुंदर जलयात्रा द्वारा पूरे संकुल में धुमकर 'देवस्य' स्थान की मुलाकात सभी से ली । होर्स राइडींग, गायो, तथा अनेक कुदरती सौंदर्य में विचरण करते पक्षीयो प्राणियो के दर्शन के साथ रास गरबा का आनन्द ऐसे प्राकृतिक माहोल में सभी को मिला । सुन्दर विशाल टेन्ट में महाप्रसाद का आयोजन किया गया । हरार के हरिभक्त साथ पू. महाराजश्री को भी सेवा करते देखा तो सभी का हृदय पुलकित हो गया । साथ ही प.पू. लालजी महाराजश्री, पू. श्रीराजा, पू. बिन्दुराजा, सौम्यकुमार और सुव्रतकुमार भी सेवा में जुडे जीवन में सब को ऐसा धर्मकुल साथ आनंद मिलने का अवसर प्रथमबार देखा गया । अनेक भक्तो ने महापूजा का लाभ लिए । देवस्य के नाम से रोडपर तक्ति के लिए प.पू. महाराजश्री की निश्रा में उछामनी की गई । अन्तिम रविवार को सब का सन्मान बाद सुन्दर कार्यक्रम का समापन विधिहुई ।(प्रविण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर ह्युस्टन

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की पूर्ण कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से अपने श्री स्वामिनारायण मंदिर ह्युस्टन टेक्सास खाते ता. २२-८-१८ से ता. २७-८-१८ के दरम्यान रोज साम ५-३० से ८-३० तक श्रीहरि की लीला चरित्र की कथा शा. स्वामी सुव्रतदासजी के वक्ता पद से हरिभक्तोने कथा को सुना । कथा दौरान विविधसेवा में यजमानो का सम्मान पार्षद महेन्द्र भगत और कमिटी द्वारा करने मे आया । श्रावण मास में अमावस के सोमवार को अमास शाम को ५ से ८ के बीच विधिवह तरीके से की । जिसकी विधिभूदेव श्री नितीनभाईने कराई । यज्ञ, आरती दर्शन, शयन के दर्शन, अन्नकूट उत्सव, फ्रुट, शब्जी अन्नकूट की उछवणी की गई । सभी यजमानो का फुलहार से अभिनन्दन किया गया ।

अंतिम दिन आरती अन्नकूट सेवा में मनजीभाई हिराणी, विमलभाई गोविंदभाई पटेल, (प्रेसी.) कथा के यजमान उषाबेन प्रविणभाई शाह परिवार साथ जुडे । सुंदर मजा के हिंडोला में भगवान को झुलाने का लाभ सभीने प्राप्त किया । अनेक हरिभ्कतोने छोटी मोटी सेवा करके श्रीहरि और धर्मकुल का राजीपा प्राप्त किया ।(प्रविण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर छपैयाधाम पारसीप की कथा पारायण

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की पूर्ण कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से अपने श्री स्वामिनारायण मंदिर पारसीप की छपैया धाम में ता. २२ से २६ जुलाई के दरम्यान शाम को ५ बजे से ८ बजे शिवपुराण की कथा शा. स्वा. अभिषेकप्रसादासजी के वक्तापद से हुई । हरिभक्त श्रावण मास में सुन्दर कथा का श्रवण कर धन्य बने । सेवा करने वाले यजमानो का पू. महंत स्वामीने फुलहार से सम्मान किया ।(प्रविण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की पूर्ण कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से अपने श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनीया में श्रावण वद-८ को श्री कृष्ण जन्माष्टमी धूमधाम से मनाई सभी भक्तोने साथ में जन्मोत्सव की उजवणी कर आरती उतर कर पंजीरी का प्रसाद बांटा गया । यजमानो का सुंदर सम्मान कर स्वयं सेवक भाई बहनो ने सेवा की ।(प्रविण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर लेस्टर (यु.के.) १४ वाँ वार्षिक पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की पूर्ण कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से और प.पू. मोटा महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा भारत से आइ संतो के मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर लेस्टर में बिराजमान श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज का १४ वा वार्षिक पाटोत्सव दि. १२-८-१८ से १९-८-१८ तक हरिभक्तो के सुंदर सहयोग से धूमधाम से सम्पन्न हुआ । इस प्रसंग में श्रीमद् सत्संगिजीवन सप्ताह पारायण शा. स्वा. कुंजविहारीदासजी और शा. विश्ववल्लभदासजी के वक्तापद पर सम्पनन हुआ । सेवा में योगी स्वामी और कमलेश भगत जुडे ।

इस प्रसंग में स्ट्रेधाम मंदिर से शा. स्वा. सत्यप्रकाशदासजी और मुक्तजीवन स्वामी और यु.के. के बहुतर्ज शहरो के हरिभक्त आए और कथा श्रवण किया । कथा में आनेवाले उत्सवो की भव्य उजवणी कराई गई ।

ता. १८-८-१८ रविवार के सुबह ८-३० बजे साथ यजमान हरिभक्तो द्वारा ठाकोरजी का षोडशोपचार अभिषेक और उसेक बाद अन्नकूट ठाकोरजी को चढा कर हजारो हरिभक्तोने दर्शन कर धन्यता अनुभव किया । श्रावण मास में ठाकोरजी को अलौकिक भव्य हिंडोला बना के झुलाया गया । समग्र प्रसंग में युवा हरिभक्तो बहनो आदि की सेवा प्रेरणारुप थी ।

लेस्टर मंदिर में श्रीकृष्ण जन्मोत्सव श्रावण वद-८ ता. ३-९-१८ को शाम ६ से ९ लेस्टर मंदिर में श्रीकृष्ण जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया गया ।

संत हरिभक्तो द्वारा धूमधाम, भजन कीर्तन बाद कुंजविहारी स्वामी को श्रीकृष्ण जन्मोत्सव की प्रागट्य की कथा कि गई । संतो द्वारा यजमानों का सन्मान करके भव्य जन्मोत्सव मनाया आरती करके पंजीरी का प्रसाद बाँटा अनेक हरिभक्तो ने जन्मोत्सव दर्शन करके धन्य बने । (किरण भावसार - मानद् मंत्री लेस्टर)

बिल्सडनलेन लंडन श्री स्वामिनारायण मंदिर में संत स्मृति महोत्सव

संत परम हिताकरी, जगत मांही संत परम हिताकरी

प्रभु पद प्रगट करावत प्रिति, भरम मीटावत भारी

कोई संत स्वधान जाए और उसकी स्मृति मे कथा हो तो वह होता हो आया छे । परं एक साथ छे संतो की स्मृति मे एक भव्य कथा का आयोजन किया और वो भी पहलीबार यु.के.की. धरती पर स्वामिनारायण मंदिर बिल्सडन (लंडन) तरफ से गत वर्ष में स्वधाम गए भुज और अहमदाबाद मंदिर में ६ संतो की स्मृति में ता. १०-७-१८ से ता. १६-९-१८ तक संत स्मृति महोत्सव का आयोजन किया गया ।

भुज कच्छ मंदिर में अ.नि. स.गु. स्वामी केशवप्रसाददासजी अ.नि. स.गु. स्वामी भक्तिवल्लभदासजी, अ.नि. स.गु. स्वामी विस्वजीवनदासजी, अ.नि. स.गु. स्वामी धर्मप्रसादजी और अहमदाबाद मंदिर के अ.नि. स.गु. स्वामी देवप्रकाशदासजी तता अ.नि. स.गु. ब्रह्मचारी स्वामी राजेश्वरानंदजी आदि संतोने सत्संग की बहुत सेवा की श्रीजी महाराज के धाम में गए उन्होने देव के लिए खुद का जीवन सर्मपित किया इस प्रसंग में अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री ता. १०-८-१८ से ११-८-१८ तक आए और सभी अक्षरनिवासी संतो को याद किया भुज मंदिर से स.गु. भक्तिप्रियदासजी स्वामी, स.गु. कृष्णस्वरुपदासजी, श्री रंगदासजी, स्वामी विहारीदासजी, स्वा. बालकृष्णदासजी, स्वामी देवजीवनदासजी, स्वामी आनंदवल्लभदासजी, स्वामी भक्तिजीवनदासजी तता योगी स्वामी और स्वामी सत्यप्रकाशदासजी, नौतममुनि स्वामी अहमदाबाद आदि संत आए । स्वामी रंगदासजी स्वामी, सत्यप्रकाशदासजी, स्वामी प्रेमवल्लभदासजी, स्वामी आनन्दवल्लभदासजी तथा स्वामी भक्तिजीवनदासजी वक्तापदे श्रीमद् सत्संगिजीवन सप्ताह पारायण का रसपान कराया । कथा दरम्यन रोज शाम को एक एक युवरु दिवंगत संतो के जीवन ऊपर खुद भी भावनाए प्रस्तुत कि ।

कार्यक्रम ता. ९-९-१८ पोथीयात्रा, १०-९-१८ संतो की उपस्थिति में कथा प्रारंभ, ता. ११-९-१८ प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का आगमन, ता. ११-९-१८ प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री आशीर्वाद, ता. १२-९-१८ यजमानो का सम्मान और प.पू. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद ता. १३-९-१८ हरिभक्तो के विशाल समूह के साथ गणपति पूजन आरती, ता. १४-९-१८ समूह रासोत्सव, ता. १५-९-१८ भक्ति संगीत महाप्रसाद, ता. १६-९-१८ श्री हरिकृष्ण महाराज का महाभिषेक और पूर्णाहुति । (जेठालाल धनजी सवाणी)

आपना करांची श्री स्वामिनारायण मंदिर में जन्माष्टमी - श्री गणपतिजी के उत्सव की उजवणी

अपने करांची (पाकिस्तान) श्री स्वामिनारायणमंदिर में हरएक उत्सव धूमधाम से मनाया जाता है। ताजेतर में ही जन्माष्टमी में श्रीकृष्ण जन्मोत्सव धुमधाम से मनाया गया। जिस में रणजीत गोपाल कुंडास, विनोद गंगाराम माधाणी, महेश करमचंद त्रिवेदी, अनिल काशीराम ओवाले, गोविंद केदेवानी, प्रदिप लीलाराम, कंसरीका, मोहनदास लथाराम थरु, हरि लखा देवरीया, संजय राम गोपाल, राजु वेलजी वाघेला, अशोककुमार बाबुलाल, सीवजी सोमजी सोडम, रमेश गोपाल राजा, श्याम बसरमल चंदन, रोहित भगवंत मतंग, देवराज रामजी, दनीया, विनोद फकीरचंद पतरीया, अविनाश लासी, रोहित महेशवरी इत्यादी बहुत मेहनत की। इस अवसर गणेश चतुर्थी का त्यौहार धूमधाम से मनाया गया। जिस में उपरोक्त हरिभक्तो का प्रदिप कुडाल, शीवजी लावा देवरिया, विसाल वसंत कारसिया और सुमित पुरन वाघेला आदि ने साथ दिया धर्मकुल की कृपा आशीर्वाद से सत्संग की प्रवृत्ति सुंदर चलती है।(रणजीतभाई)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली

सर्वोपरी श्री घनश्याम महाराज के नवनियुक्त पुजारी स.गु. स्वामी वृंदावनदासजी गुरु स.गु. स्वामी पुरुषोत्तमदासजी वर्तमान पूजारी के रुपमें सेवा कर रहे है।

अक्षरवास

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर अहमदाबाद साधु नारणप्रसाददासजी गुरु स.गु. शा. स्वामी देवचरणदासजी (वे.व्या.आ.) ता. २६-८-१८ के दिन श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते अक्षरनिवासी बने।

अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री नरनारायणदेव आदि देवो की थाल-रसोई की सूची

थाल का विवरण	रसोई	
चुरमाकालडू	रु. १,८००/-	रु. १०,०००/-
मगशका लड्डू	रु. १,८००/-	रु. १०,०००/-
बूंदी के लड्डू	रु. १,८००/-	रु. १०,०००/-
मोतीचूर के लड्डू	रु. १,८००/-	रु. १०,०००/-
मोहनथाल	रु. १,८००/-	रु. १०,०००/-
मगशपूरी	रु. २,०००/-	
मालपूवा	रु. २,०००/-	रु. ११,०००/-
खीरपूरी	रु. २,३००/-	रु. १२,०००/-
अडदिया का थाल	रु. २,५००/-	रु. १२,०००/-
साटा का थाल	रु. २,५००/-	रु. ११,०००/-
शीखंड पुरी	रु. २,५००/-	रु. १७,०००/-
ड्रायफ्रुट हलवा	रु. २,५००/-	रु. १२,०००/-
बासुंदी पुरी	रु. २,७००/-	रु. १७,०००/-
खीर-मालपुवा	रु. २,७००/-	रु. १४,०००/-
गुलाब जामुन	रु. ३,३००/-	रु. १२,०००/-
मैसुब	रु. ३,५००/-	रु. १२,०००/-
काजू-बदाम मैसुब	रु. ४,०००/-	रु. १७,०००/-
सत्तरधाम का थाल	रु. २,५००/-	

स्थायी सुरक्षित थाल रु. ५,००१/-
तथा रु. १०,०००/-
ठाकोरजी को शायं का थाल रु. ५००/-

Mo. : 8238001666

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर की ओफिस नंबर

Mo. No. : 82380 01666
WhatSapp No. : 99099 67104

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद(गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

(१) कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में जन्माष्टमी के अवसर पर ठाकोरजी के सन्मुख सुंदर जन्मोत्सव की एक झलक। (२) वामन जयंती के दिन श्री नरनारायणदेव की आरती उतारते हुए प.पू. श्री मोटा महाराजश्री। (३) ऋषीकेशमें श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर के द्वारा आयोजीत श्रीमद् भागवत सप्ताह का रसपान कराते वक्ताश्री। (४) नारणपुरा मंदिर आयोजित कथा में व्यासपीठ का पूजन करते हुए प.पू. श्री लालजी महाराजश्री। (५) न्यु राणीप मंदिर में जन्माष्टमी दर्शन और आरती उतारते यजमानश्री। (६) दिवडा कोलोनी मंदिर में अन्नकूट दर्शन। (७) हिमतनगर में नूतन मंदिर का निर्माणकार्य बड़ी तेजी से चलता हुआ। (८) कांकरिया मंदिर में आयोजित रुद्री यज्ञ में श्रीफल अर्पण करते हुए संत। (९) महेसाणा मंदिर में जलजीलणी एकादशी का दर्शन।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at
Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2018-2020
issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2020

1

2

3

4

(१) अमेरीका के राजदूत श्री एडवर्ड जस्टर ओर काउन्सील जनरल श्री केनेट अपने कालुपुर मंदिर में दर्शन के लीए आए तब प.पू. महाराजश्री और प.पू.श्री लालजी महाराजश्री। (२) सिनेमेन्शन (अमेरिका) के ११ वें पाटोत्सव के अवसर पर ठाकोरजी के सन्मुख दर्शन। (३) सास्काटोन (केनेडा) मंदिर के खात मुहूर्त के अवसर आयोजित सभा में प.पू. महाराजश्री का पूजन करते हुए हरिभक्त। (४) रजाइना (केनेडा) के दुसरे पाटोत्सव के अवसर पर ठाकोरजी का अभिषेक करते हुए प.पू.श्री आचार्य महाराजश्री।

WhatsApp No. +91 9909967104
Follow Us On

Praful Kharsani